कमल संदेश
ikf{kd if=dk

संपादक

प्रभात झा, सांसद

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिव शक्ति बक्सी

सहायक संपादक

संजीव कुमार सिन्हा

संपादक मंडल सदस्य

सत्यपाल

कला संपादक

धर्मेन्द्र कौशल
विकास सैनी

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 100/-
त्रि वार्षिक : 250/-

संपर्क

InL;rk : +91(11) 23005798
Qku (dk-) : +91(11) 23381428
QDI : +91(11) 23387887
पता : डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003

ई–मेल

kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी–36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली–55 से मुद्रित करा के, डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक – प्रभात झा

विषय–सूची

प्रधानमंत्री के कार्यक्रम..... 7
स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री के भाषण के मुख्य बिन्दु..... 11

लेख

उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ता भारत
– **डॉ. शिव शक्ति बक्सी**..... 14
सक्षम नेतृत्व का उदय
– **ए. सूर्य प्रकाश**..... 18
प्रधान सेवक का उदय
– **एनके सिंह**..... 20
मोदी सरकार ने उठाए मुद्रास्फीति नियंत्रित करने के गम्भीर कदम
– **विकाश आनन्द**..... 22

अन्य

गोवंश विकास प्रकोष्ठ..... 25

प्रदेशों से

जींद, हरियाणा..... 26
उत्तर प्रदेश..... 27

कमल संदेश के सभी सुधी पाठकों को गणेश चतुर्थी की हार्दिक शुभकामनाएं!

राष्ट्रपति की डायरी

यह उस समय की बात है कि जब डॉ. राजेन्द्र प्रसाद देश के राष्ट्रपति बन चुके थे। राजेन्द्र बाबू को डायरी लिखने की आदत थी। एक बार अपने जन्मदिन पर सवेरे उठते ही जब वे अपनी डायरी में कुछ लिखने बैठे तो उन्होंने देखा कि उसके कुछ पन्ने फटे हुए हैं। उन्हें समझते देर न लगी कि यह उनके घर के बच्चों का काम है। उन्होंने सोचा कि क्यों न ऐसा कुछ किया जाए कि बच्चे स्वयं ही अपनी गलती मानें और खुद ही बताएं कि सच क्या है।

राजेंद्र बाबू बच्चों पर अपनी तरफ से कोई आरोप नहीं लगाना चाहते थे। उनका मानना था कि ऐसा करने से बच्चों में अपराध की प्रवृत्ति पनप सकती है। वे सोचने लगे कि आखिर बच्चों से इस बारे में किस तरीके से बात की जाए। कुछ देर सोचने के बाद उन्हें एक उपाय सूझ ही गया। उन्होंने बच्चों को अपने पास बुलाकर कहा, 'जिस बच्चे ने इसके पन्ने फाड़े हैं, उसे उतने ही पैसे इनाम में दिए जाएंगे।'

पैसों की बात सुनकर सभी बच्चे बहुत खुश हुए और निर्भय होकर सभी ने पन्ने फाड़ने की बात बता दी। राजेन्द्र प्रसाद ने सब बच्चों को सुंदर इनाम भी दिए और यह भी समझाया कि डायरी या किताब के पन्ने फाड़ना अच्छी बात नहीं है। उसमें लिखी हुई अनेक अमूल्य बातों से हम वंचित हो जाते हैं और जब समय पर हमें जरूरी चीज नहीं मिलती तो हमें अपने किए पर बहुत पछताना पड़ता है। अब सारी बात बच्चों की समझ में आ चुकी थी। उन्होंने खुश होकर राजेन्द्र बाबू से वादा किया कि वे फिर ऐसी गलती कभी नहीं करेंगे।

संकलन : राधा नाचीज

(नवभारत टाइम्स से साभार)

उनका कहना है....

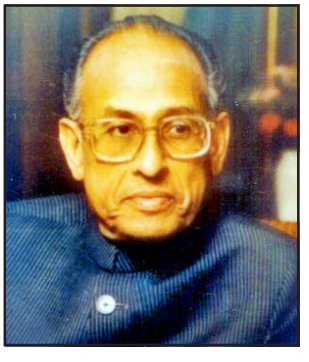

आज कई तरह के खतरे हमारे ऊपर मंडरा रहे हैं। ये खतरे बौद्धिक भी हैं और सांस्तिक भी। सांस्कृतिक खतरा कोई भौगोलिक खतरे से कम नहीं होता। भाषा का लुप्त हो जाना कोई कम खतरा नहीं है। अपने पंथों अथवा संप्रदायों की जानकारी न होना भी एक खतरा है। अपनी मान्यताओं के लिये निष्ठा न होना और भी बड़ा खतरा है। ये सब खतरे भी एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। जिस देश को नष्ट करना हो, उसकी संस्कृति नष्ट कर दीजिये, उसकी भाषा नष्ट कर दीजिये, अपने आप वह समाज और जाति नष्ट हो जायेगी।

- डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

लाल किले की प्राचीर से उभरता भारत

15 अगस्त 2014 – 68वां स्वतंत्रता दिवस

लालकिले पर पहली बार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा ध्वजारोहण

यह दिन देश के मानस पटल पर एक अमिट छाप छोड़ गया। इस विशेष अवसर पर जबकि पूरा देश अंग्रेजों की दासता से मुक्ति का पर्व मना रहा था, साथ ही नवनिर्वाचित प्रधानमंत्री के भाषण का बेसब्री से इंतजार कर रहा था। प्रधानमंत्री से पूरे देश की अपार आशाएं एवं अपेक्षाएं जुड़ी हैं। अब जबकि जीवन के हर क्षेत्र में युवा आकांक्षाएं कुलांचे मार रही है, लोग ऐसे नेतृत्व की ओर देख रहे हैं जो इस युवा शक्ति को अवसर में बदल देश को इसका लाभ पहुंचा सके। बढ़ते युवा आकांक्षाओं, गरीबों की अपेक्षाओं एवं आम जन की आशाओं के बीच नरेन्द्र मोदी के प्रेरणादायक भाषण ने उभरते भारत की जगमगाती तस्वीर खींच दी। इससे पूरा देश अपने भविष्य के प्रति आश्वस्त तो हुआ ही है साथ ही देश की नियति पर लोगों का विश्वास पुनर्स्थापित हुआ है।

लालकिले का स्वतंत्रता दिवस समारोह जो दशकों से आम जनता के लिए बंद था, इस बार खोल दिया गया। आम जन ने भी इसके फलस्वरूप भारी संख्या में अपनी भागीदारी की। यह वास्तव में राष्ट्र को एक संदेश था कि स्वतंत्रता दिवस समारोह, जो पिछले कुछ वर्षों से एक सरकारी कार्यक्रम बन गया था, वह एक राष्ट्रीय पर्व है और हर कोई इस उत्सव का भाग है। प्रधानमंत्री ने लोगों का दिल जीत लिया जब उन्होंने सुरक्षाकर्मियों से अपने सामने का बुलेटप्रूफ शीशा हटवा दिया क्योंकि वे अपने और देश की जनता के बीच कोई दीवार खड़ी करना नहीं चाहते। अपने सरकार एवं सुशासन की अवधारणा को व्यक्त करते हुए जब प्रधानमंत्री ने स्वयं को 'प्रधान सेवक' कहा तो लोग भाव विभोर हो गये। उन्होंने अपनी बात लिखे हुए भाषण की परम्परा से हटकर दिल से कही तथा लोगों तक अपनी बात पहुंचाने में सफल रहे। इस अवसर पर एक नई परंपरा की नींव रखी गई और लोग राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में अपनी भूमिका तलाशने को प्रेरित महसूस करने लगे।

प्रधानमंत्री के भाषण की विशेषता यह थी कि लगभग हर कोई स्वयं को प्रेरित महसूस करने लगा– अफसरशाही से लेकर राजनैतिक वर्ग तथा कॉरपोरेट वर्ग से लेकर आम जनता तक हर कोई ऊर्जा महसूस कर रहा था। उन्होंने हर कोई से अपील की तथा राष्ट्र के प्रति उनके दायित्वों के प्रति सचेत किया। अपने भाषण में उन्होंने संख्याबल पर शासन की जगह पुनः आम सहमति की राजनीति पर बल दिया तथा कहा कि हाल ही में संपन्न संसद सत्र इसका एक चमकता हुआ उदाहरण है जिसके लिए विपक्ष की भूमिका की भी भरपूर सराहना करनी चाहिए। उन्होंने इस पर भी बल दिया कि शासन के क्रियाकलाप एकता की अवधारणा पर आधारित होनी चाहिए। स्वच्छता अभियान, प्रधानमंत्री जनधन योजना, सांसद ग्राम आदर्श योजना, मेक-इन-इंडिया-मेड-इन-इंडिया, की घोषणा करते हुए उन्होंने राष्ट्र निर्माण की योजनाओं को जनांदोलन बनाने की पहल की। नरेन्द्र मोदी को जनता को वैभवशाली भारत की कल्पना से जोड़ने की असाधारण क्षमता के लिए बधाई देना चाहिए।

योजना आयोग की जगह पर एक नई संस्था के गठन की घोषणा को बदलते वैश्विक परिवेश नये पहल एवं नवीन योजनाओं के संदर्भ में देखना चाहिए। नेहरू युग के अंतिम अवशेषों में से एक के रूप में देखा जाने वाला योजना आयोग अपना समय पार कर चुका है तथा संघीय ढांचे के राह में एक रोढ़ा के रूप में देखा जाने लगा था। नई संस्था संघीय ढांचे को मजबूत कर शक्ति के विकेन्द्रीकरण

के लिए कार्य करेगी। इस निर्णय से हमारी आर्थिक योजनाओं एवं विचारों को नया जीवन मिलेगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश आगे बढ़ चला है। लाल किले की प्राचीर से उनका भाषण एक उदित होते भारत का आगाज कर रहा है जो अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ है। उनका भाषण इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने 'राष्ट्र के नियति' के संदर्भ में कहते हुए भारत के पूरे विश्व कल्याण की व्यापक दायित्वों के संबंध में देश को स्मरण कराया। इससे यह संदेश गया कि भारत एक सुदृढ़ वैभावशाली देश के रूप में उभर रहा है और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने दायित्वों को निभाने के लिए तैयार है। लोग इस बात से आश्वस्त हैं कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश महर्षि अरविन्द एवं स्वामी विवेकानन्द के सपनों को साकार करेगा। हमें बिना थके-बिना रुके दृढ़ निश्चयी होकर कार्य करना है ताकि मां भारती पुन: विश्व गुरु के अपने आसन पर आरुढ़ हो सके। ■

जेपी नड्डा बने जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव प्रभारी

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने 14 अगस्त को जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव प्रभारी के नाते श्री जगत प्रकाश नड्डा को नियुक्त किया है, साथ ही जम्मू-कश्मीर चुनाव अभियान समिति का प्रमुख श्री डा. निर्मल सिंह तथा सचिव श्री सत शर्मा को नियुक्त किया है।

वैचारिकी

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से ही देश अक्षुण्ण रहेगा

✍ विष्णुकान्त शास्त्री

मैं यह स्पष्ट करना चाहूंगा कि मैं यह नहीं मानता कि 15 अगस्त, 1947 को भारत एक नया राष्ट्र बन गया। सच तो यह है कि ऐसा मानने वाले बहुत विरले हैं।

प्राचीन भारतवर्ष के इतिहास में मनु, रघु, श्रीराम, युधिष्ठिर, अशोक, विक्रमादित्य आदि कुछ ही ऐसे चक्रवर्ती राजा थे जिन्होंने पूरे भारतवर्ष पर शासन किया था। अन्यथा भारतवर्ष के विभिन्न प्रदेशों में अलग-अलग स्वाधीन राज्य थे। हमारा इतिहास साक्षी है कि राजनीतिक दृष्टि से विभिन्न राज्यों में विभक्त होते हुए भी सांस्कृतिक दृष्टि से पूरा भारतवर्ष एक देश माना जाता था। देश के किसी भी कोने में बैठ कर पुण्य कार्य करने वाला व्यक्ति जल को शुद्ध करने के लिए देश के विभिन्न भागों में बहने वाली सात पवित्र नदियों का आह्वान करता था, जो परंपरा आज तक चली आ रही है। कांग्रेस के बड़े नेताओं ने भी कभी ऐसा नहीं कहा कि 15 अगस्त 1947 को भारत एक नया राष्ट्र बन गया। स्वाधीनता के लिए जिन वीरों ने संघर्ष किया था उनकी आंखों में स्वदेश का एक चित्र था। लोकमान्य तिलक ने जब सिंह गर्जना की थी कि 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा' तो वे केवल राजनीतिक स्वाधीनता की ही बात नहीं कर रहे थे। अपने 'स्व' का स्पष्टीकरण करने के लिए ही उन्होंने गीता रहस्य की रचना की थी। महात्मा गांधी ने भारतीय स्वराज्य की संज्ञा दी थी 'रामराज्य।'

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने स्वाधीनता के बाद 24 जनवरी 1948 को अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा था "हमें अपनी उस विरासत और अपने उन पूर्वजों पर गर्व है जिन्होंने भारत को बौद्धिक एवं सांस्कृतिक श्रेष्ठता प्रदान की। आप इस अतीत के बारे में क्या सोचते हैं? क्या आपको भी यह महसूस होता है कि आप भी इसके साझीदार और उत्तराधिकारी हैं? क्या आप भी उस पर गौरवान्वित होते हैं, जो आपका भी उतना ही है जितना मेरा अथवा आप उसे अपना ही समझते हैं?" उनको स्पष्ट अपेक्षा थी कि उन सब विद्यार्थियों को भी प्राचीन भारत की उपलब्धियों के लिए गौरव का अनुभव करना चाहिए। इस निरूपण से यह साफ हो जाता है कि स्वाधीन भारत प्राचीन भारत का ही विकसित आधुनिक रूप है।

मैं समझता हूं कि अपने राष्ट्रवाद को परिभाषित करने के पहले हमें अपने पारम्परिक स्वरूप को पहचानना चाहिए। हमें उस स्वरूप को हृदयंगम करना चाहिए जो परिस्थितियों के दबाव में रूपत: बाहर से तो बदलता रहता है किन्तु भीतर से अपरिवर्तित रहा है। हम परम्परा के आधारभूत चिंतन मनन और जीवन में उसके प्रतिफलन को समझने की चेष्टा करें।

राजधर्म और राजनीति

महाभारत में कहा गया है कि धारण करने की शक्ति के कारण धर्म, धर्म होता है। धर्म वही है जो प्रजा धारण करे। अत: निश्चित सिद्धांत यही है कि जो धारण शक्ति से संयुक्त है वही धर्म है। यहीं कुछ चर्चा संस्कृति की भी कर ली जाये।

शेष पृष्ठ 29 पर

प्रधानमंत्री के कार्यक्रम

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी देशभर में अभिनव योजनाओं को मूर्त रूप देते हुए एक समृद्धशाली भारत का सपना साकार करने में जुटे हुए हैं। हम यहां कुछ प्रमुख कार्यक्रमों का संक्षिप्त समाचार प्रकाशित कर रहे हैं –

नागपुर

लोग विकास और स्वच्छता के लिए मिलकर काम करने का संकल्प करें

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आज पीपीपी मॉडल के जरिए देश के पांच सौ शहरी केन्द्रों में ठोस कचरा प्रबंधन तथा अवशिष्ट जल प्रबंधन पर अपनी दृष्टि पेश की। उन्होंने कहा कि इससे शहरों तथा नगरों में स्वच्छता रहेगी और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि के लिए पर्याप्त जल आपूर्ति में मदद मिलेगी। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत का तेजी के साथ शहरीकरण हो रहा है और वह इसे चुनौती के रूप में नहीं बल्कि आर्थिक विकास के लिए अवसर के रूप में देखते हैं। प्रधानमंत्री नागपुर मेट्रो तथा पारदी ग्रेड सेपेरेटर तथा एनएच- 6 पर फ्लाई ओवर की आधारशिला रखने के बाद नागपुर में जन समूह को संबोधित कर रहे थे।

प्रधानमंत्री ने कहा कि यह प्रत्येक भारतीय के लिए चिंता की बात है कि अन्य देशों की तुलना में विकास की दौड़ में हम पीछे रहे गये हैं। उन्होंने कहा कि प्रत्येक भारतीय को यह संकल्प लेना चाहिए कि देश विकास करे। उन्होंने कहा कि यह संकल्प राष्ट्रीय चरित्र का हिस्सा है।

प्रधानमंत्री ने कड़े शब्दों में भ्रष्टाचार की निंदा की और कहा कि वह इस पर काबू पाने के लिए संकल्पबद्ध हैं।

प्रधानमंत्री ने स्वच्छता के प्रति महात्मा गांधी की प्रतिबद्धता की चर्चा की। उन्होंने कहा कि शहर को स्वच्छ रखने की जिम्मेदारी नागरिकों की है। उन्होंने नागपुर के लोगों का आह्वान किया कि वे स्वच्छ शहर के लिए काम करें।

इस अवसर पर महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री के शंकर नारायणन, शहरी विकास मंत्री श्री वैंकेया नायडु, सड़क परिवहन तथा राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी तथा ऊर्जा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री पीयूष गोयल भी मौजूद थे।

मौदा, महाराष्ट्र

देश भर में सभी को बिजली मुहैया कराना केंद्र सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने घोषणा की कि देश भर में सभी को बिजली मुहैया कराना उनकी सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। प्रधानमंत्री 1000 मेगावाट का मौदा सुपर थर्मल पावर प्रोजेक्ट चरण- 1 राष्ट्र को समर्पित करने के बाद उपस्थित जनसमूह को संबोधित कर रहे थे।

प्रधानमंत्री ने कहा कि जो भी देश प्रगति करना चाहता है उसे ढांचागत सुविधाओं को प्राथमिकता देनी होगी। उन्होंने कहा कि अगर हम टिकाऊ ढांचागत सुविधाएं मुहैया करा दें तो विकास की गुंजाइश बढ़ जाएगी। प्रधानमंत्री ने कहा कि सभी तरह की ढांचागत सुविधाओं में बिजली सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह लोगों के जीवनस्तर में बदलाव लाने का एक अहम साधन है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आजादी के बाद कई साल गुजर जाने के बावजूद देश के सभी कोनों तक बिजली नहीं पहुंच पाई है। यही नहीं, अनेक क्षेत्रों में बिजली की भारी किल्लत देखी जा रही है। प्रधानमंत्री ने सभी को बिजली मुहैया कराने का संकल्प दोहराया। प्रधानमंत्री ने बताया कि भूटान, नेपाल और

जम्मू-कश्मीर के हालिया दौरों के दौरान उन्होंने पनबिजली पर विशेष बल दिया था। उन्होंने कहा कि सरकार का उद्देश्य ऊर्जा के सभी स्रोतों का दोहन करना है, जिसके तहत स्वच्छ

ऊर्जा खासकर सौर ऊर्जा पर विशेष जोर दिया जा रहा है।

प्रधानमंत्री ने इस मौके पर विदर्भ के कर्ज जाल में फंसे किसानों की बुरी दशा की याद दिलाई, जो आत्महत्या करने पर विवश हो गए थे। उन्होंने कहा कि अगर इन किसानों को बिजली सुलभ होती तो वे अपने खेतों में सिंचाई के लिए आवश्यक जल पहुंचाने तथा अपनी फसल को बचाने में कामयाब हो जाते और इस तरह वे कर्ज जाल में फंसने से बच जाते।

श्री नरेंद्र मोदी ने 28 अगस्त को 'प्रधानमंत्री जन धन योजना' शुरू करने की घोषणा की और किसानों से नई योजना का लाभ उठाने को कहा जिसमें एक बैंक खाता, एक डेबिट कार्ड और एक लाख रुपए की बीमा राशि शामिल है। उन्होंने 'प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना' का भी जिक्र किया, जिसके पीछे मुख्य उद्देश्य किसानों को सिंचाई के लिए पर्याप्त जल मुहैया कराना है।

महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री के. शंकरनारायणन, केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी और बिजली राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री पीयूष गोयल भी इस मौके पर उपस्थित थे।

रांची

राष्ट्रीय डिजिटल साक्षरता मिशन की शुरूआत की

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जोर देकर कहा कि अगर भारत को एक विकसित राष्ट्र के रुप में उभरना है तो देश का कोई हिस्सा कमजोर और अर्द्ध-विकसित नहीं बना रह सकता। प्रधानमंत्री ने कहा कि पूर्वी भारत अर्द्ध-विकसित बना हुआ है। उन्होंने कहा कि विकास को उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम चारों दिशाओं में संतुलित होना चाहिए, जिससे कि पूरे देश के आम लोग समान रूप से विकास के फल का आनंद उठा सकें।

प्रधानमंत्री, रांची में राष्ट्रीय डिजिटल साक्षरता मिशन का शुभारंभ करने के बाद एक जनसभा को संबोधित कर रहे थे।

प्रधानमंत्री ने जसीडीह में आईओसी ऑयल टर्मिनल और 765 केवी रांची-धर्मजयगढ़-सिपत अंतर-क्षेत्रीय पारेषण लाइन को भी राष्ट्र को समर्पित किया। प्रधानमंत्री ने घोषणा की कि जल्द ही जगदीशपुर-फूलपुर-हल्दिया गैस पाइपलाइन पर काम शुरू हो जाएगा। यह पूर्वी भारत के लिए ऊर्जा का एक बडा स्रोत बन जाएगा।

प्रधानमंत्री ने उत्तर कर्णपुरा सुपर थर्मल पावर संयंत्र पर

भी काम का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि यह बिजली संयंत्र झारखंड से अंधकार मिटा देगा।

प्रधानमंत्री ने दो सूचना प्रौद्योगिकी संबंधित परियोजनाओं का भी शिलान्यास किया। उन्होंने कहा कि झारखंड के पास विकास की असीम संभावना है और वह विकास के जरिए झारखंड के लोगों के प्रेम और स्नेह का ऋण अदा करेंगे।

प्रधानमंत्री ने जोर देकर कहा कि अगर भारत को विकसित राष्ट्र बनना है तो इसके राज्यों को भी विकसित होना होगा। उन्होंने खनिज पदार्थों पर रॉयल्टी दरों को बढ़ाने के कल के मंत्रिमंडल के फैसले का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि यह फैसला झारखंड को बहुत ज्यादा लाभान्वित करेगा। इस अवसर पर झारखंड के राज्यपाल श्री सैयद अहमद, झारखंड के मुख्यमंत्री श्री हेमंत सोरेन, केन्द्रीय संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी और कानून एवं न्याय मंत्री श्री रवि शंकर प्रसाद, बिजली, कोयला और नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री पीयूष गोयल और

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री धर्मेंद्र प्रधान उपस्थित थे।

'कैथल-नरवाना-हिसार-राजस्थान' राजमार्ग की आधारशिला

भ्रष्टाचार कैंसर से ज्यादा गंभीर बीमारी लोगों की सहायता से देश से इसका सफाया करेंगे

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भ्रष्टाचार को कैंसर से भी ज्यादा गंभीर बीमारी बताया और कहा कि वे लोगों की सहायता से भ्रष्टाचार को देश से समाप्त करने के लिए दृढ़ संकल्प हैं।

प्रधानमंत्री हरियाणा के कैथल में चार लेन वाले 'कैथल-नरवाना-हिसार-राजस्थान सीमा' राजमार्ग की आधारशिला रखने के बाद एक विशाल जनसभा को संबोधित कर रहे थे। श्री नरेन्द्र मोदी ने एकत्र जनसमूह से सवाल किया ''क्या समाज से भ्रष्टाचार समाप्त किया जाना चाहिए, यदि मैं इसे समाप्त करने के लिए कठोर कदम उठाऊं तो क्या आप मेरी सहायता करेंगे?''

तालियों की गड़गड़ाहट के बीच प्रधानमंत्री ने घोषणा की कि वे लोगों की सहायता से देश को भ्रष्टाचार से मुक्ति दिलाएंगे। उन्होंने कहा कि मेरा क्या, मुझे क्या के रवैये ने देश को तबाही के रास्ते पर धकेल दिया है और इसे तत्काल समाप्त किया जाना चाहिए। देश ऐसी बुराइयों को अब लंबे समय तक नहीं झेल सकता।

देश के विकास में बुनियादी ढांचे के महत्व को उजागर करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि हरियाणा ने इसका अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया है। राष्ट्रीय राजमार्ग- 1 के दोनों तरफ की जमीन को बढ़िया तरीके से विकसित किया गया है लेकिन इसे छोड़कर राज्य में विकास की कमी को देखा जा सकता है। उन्होंने कहा कि विकास के लिए सड़कों का नेटवर्क ठीक उसी तरह आवश्यक है जिस तरह शरीर के प्रत्येक अंग तक रक्त को पहुंचाने के लिए नसों का नेटवर्क। प्रधानमंत्री ने आधुनिक बुनियादी ढांचे के विकास के लिए सरकार का विजन रखा जिसमें विश्व स्तर की सड़कों का निर्माण, ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क, बिजली, गैस और पानी के ग्रिड शामिल हैं।

कैथल राजस्थान सीमा क्षेत्र में चार लेन वाली परियोजना का जिक्र करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि यह सड़क हरियाणा और राजस्थान को जोड़ेगी और दोनों राज्यों के बीच व्यापार और परिवहन को बढ़ाएगी जिससे देश को फायदा मिलेगा। प्रधानमंत्री ने इस परियोजना की आधारशिला रखी।

प्रधानमंत्री ने कहा कि युवकों के लिए रोजगार के अवसर जरूरी हैं और रोजगार सृजित करने के लिए विकास आवश्यक है। उन्होंने कहा कि समारोह में इतनी बड़ी संख्या में लोगों की उपस्थिति इस बात का प्रमाण है कि लोग विकास चाहते हैं। वे विकास के मार्ग पर पूरी दुनिया के साथ शामिल होना चाहते हैं।

भारत के अन्न भंडारों को भरने के लिए हरियाणा के किसानों का अभिवादन करते हुए प्रधानमंत्री ने उनसे कृषि के आधुनिक तरीके और प्रौद्योगिकी अपनाने का आह्वान किया ताकि अन्न का भंडार भी भरे, और किसान की जेब भी भरे। पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा शरू की गई प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का जिक्र करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि उनकी सरकार प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के जरिए किसानों के लिए सिंचाई की सुविधा सुनिश्चित करेगी।

इस अवसर पर हरियाणा के राज्यपाल प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी, हरियाणा के मुख्यमंत्री भूपेन्दर सिंह हुड्डा, केन्द्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी, सड़क परिवहन और राजमार्ग राज्य मंत्री कृष्णपाल और रक्षा राज्य मंत्री राव इंद्रजीत सिंह भी मौजूद थे।

युद्धपोत आईएनएस कोलकाता

आईएनएस कोलकाता राष्ट्र के ''बुद्धि बल'' का प्रमाण है

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आज देश में निर्मित युद्धपोत आईएनएस कोलकाता राष्ट्र को समर्पित किया।

युद्धपोत के जलावतरण के बाद मुम्बई में नौसेना गोदी में नौसेना के अधिकारियों और नाविकों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने आईएनएस कोलकाता को राष्ट्र के ''बुद्धि बल'' का प्रमाण बताया। उन्होंने कहा कि भारत का लक्ष्य ऐसी रक्षा क्षमता हासिल करने की है कि कोई उसकी ओर बुरी नजर से न देख सके।

श्री नरेन्द्र मोदी ने इस बात पर बल दिया कि सशस्त्र सेनाओं के लिए जितना महत्वपूर्ण बाहुबल है उतना ही महत्वपूर्ण ''बुद्धि बल'' यानि वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षमता है। प्रधानमंत्री ने आईएनएस कोलकाता को सबसे बड़ा स्वदेशी रक्षा उत्पादन बताया। उन्होंने कहा कि ''इस जहाज को राष्ट्र को समर्पित करते हुए हम विश्व को अपने ''बुद्धि बल'' और विनिर्माण क्षमताओं से अवगत करा रहे हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि जब हम महाराष्ट्र में हों और नौसेना की बात कर रहे हों तो ऐसे में छत्रपति शिवाजी को स्मरण किए बिना नहीं रहा जा सकता, जो एक महान मराठा सम्राट थे जिन्होंने नौ सेना को भारत के समुद्री व्यापारिक हितों के लिए एक महत्वपूर्ण साधन समझा था। उन्होंने कहा कि आज समुद्री सुरक्षा वैश्विक व्यापार का एक महत्वपूर्ण पक्ष है, और भारत वैश्विक व्यापार को सुरक्षित बनाने में अपनी भूमिका अदा कर रहा है। उन्होंने कहा कि आईएनएस कोलकाता एक महत्वपूर्ण संचार प्लेटफार्म है और यह समुद्र में भारत के व्यापारिक हितों को बढ़ावा देने में उपयोगी सिद्ध होगा।

प्रधानमंत्री ने समुद्री रक्षा प्रतिष्ठानों के लिए हाल में बजट में किए गए प्रावधानों की चर्चा की और कहा कि भारत में विनिर्माण सुविधाओं के लिए दुनियाभर से सर्वोत्कृष्ट हथियार और उपकरण विनिर्माताओ को आमंत्रित किया जायेगा और एक दिन आयेगा कि भारत रक्षा उत्पादन के क्षेत्र में आत्म-निर्भर बन जायेगा।

प्रधानमंत्री ने भारतीय सशस्त्र सेनाओं की वीरता की सराहना की और जवानों को आश्वासन दिया कि समूचा राष्ट्र उनके साथ खड़ा है और उन्हें विश्वास है कि वे देश की रक्षा करने में कोई खामी नहीं छोड़ेंगे।

रक्षा मंत्री श्री अरुण जेटली ने आईएनएस कोलकाता के जलावतरण पर नौसेना को बधाई दी। महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री के शंकरनारायणन, महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री श्री पृथ्वीराज चव्हाण, सेना अध्यक्ष एडमिरल आर. के धवन, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री अजीत डोभाल, रक्षा सचिव श्री आर के माथुर और सेना, नौसेना तथा वायु सेना के वरिष्ठ अधिकारी इस अवसर पर मौजूद थे।

प्रधानमंत्री ने आईएनएस कोलकाता पर लगी विभिन्न सुविधाओं का जायजा भी लिया और आगन्तुक पुस्तिका पर हस्ताक्षर भी किए। ■

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री के भाषण के मुख्य बिन्दु

मैं आपके बीच प्रधानसेवक के रूप में उपस्थित हूँ : नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त 2014 को लाले किले की प्राचीर से राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए करीब एक घंटे भाषण दिया। उन्होंने बिना लिखा हुआ भाषण दिया। उनके भाषण की देशभर में भरपूर प्रशंसा हुई और इससे लोगों में उतसाह और विश्वास का संचार हुआ। हम यहां उनके भाषण के मुख्य बिन्दु प्रकाशित कर रहे हैं:-

1. इस आजादी के पावन पर्व पर प्यारे देशवासियों को भारत के प्रधान सेवक की अनेक-अनेक शुभकामनाएं। मैं आपके बीच प्रधानमंत्री के रूप में नहीं, प्रधान सेवक के रूप में उपस्थित हूं।
2. देश की आजादी के लिए मर-मिटने वाले, समर्पित उन सभी आजादी के सिपाहियों को मैं शत- शत वंदन करता हूं, नमन करता हूं।
3. स्वतंत्रता दिवस हमारे देश के गरीब, पीड़ित, दलित, शोषित समाज के पिछड़े हुए सभी लोगों के कल्याण का, उनके लिए कुछ न कुछ कर गुजरने का संकल्प लेने का पर्व है।
4. हर कार्यकलाप राष्ट्रहित की कसौटी पर कसे जाएं। अगर इस प्रकार का जीवन जीने का हम संकल्प करते हैं, तो आजादी का पर्व भारत को नई ऊंचाइयों पर ले जाने का एक प्रेरणा पर्व बन सकता है।
5. ये देश शासकों ने नहीं, किसानों ने, मजदूरों ने, माताओं-बहनों ने, नौजवानों ने, ऋषियों-मुनियों, आचार्यों, शिक्षकों ने, वैज्ञानिकों ने और समाज सेवकों ने बनाया है।
6. एक छोटे से नगर का गरीब परिवार का एक बालक आज लाल किले की प्राचीर से भारत के तिरंगे के सामने सिर झुकाने के लिए उसने सौभाग्य प्राप्त किया है। यह भारत के लोकतंत्र की ताकत है। भारत के संविधान रचयिताओं का दिया हुआ अनमोल सौभाग्य है। भारत के संविधान निर्माताओं को नमन करता हूं।
7. आजादी के बाद देश जहां पहुंचा है उसमें इस देश के सभी प्रधानमंत्रियों का योगदान है। इस देश की सभी सरकारों का, सभी राज्यों की सरकारों का भी योगदान है।
8. हम साथ चलें, मिलकर चलें, मिलकर सोचें, मिलकर संकल्प करें, और मिलकर के हम देश को आगे बढ़ाएं इस मूलमंत्र को लेकर के सवा सौ करोड़ देशवासियों ने देश को आगे बढ़ाया है।
9. हम बहुमत के बल पर चलने वाले लोग नहीं हैं। हम सहमति के मजबूत धरातल पर आगे बढ़ना चाहते हैं।
10. लालकिले के प्राचीर से गर्व के साथ मैं सभी सांसदों का, सभी राजनीतिक दलों का भी अभिवादन करता हूं। जहां हम सहमति के मजबूत धरातल पर राष्ट्र को आगे ले जाने के महत्वपूर्ण प्रयोग करके हमने कल संसद के सत्र का समापन किया।
11. जब दिल्ली आकर कर एक इनसाइडर व्यू देखा, तो ऐसा लगा जैसे एक सरकार के अंदर भी दर्जनों अलग-अलग सरकारें चल रहीं हैं। हरेक की अपनी-अपनी जागीरें बनी हुई हैं। मुझे बिखराव नजर आया, मुझे टकराव नजर आया। मैंने कोशिश प्रारंभ की है कि सरकार एक ऑर्गेनिक यूनिट बने।
12. जन सामान्य की आशा-आकाक्षाओं की पूर्ति के लिए शासन, व्यवस्था नाम का जो पुर्जा है, जो मशीन है उसको

और धारदार और तेज बनाना है

13. चपरासी से लेकर के कैबिनेट सेक्रेटरी तक हर कोई सामर्थ्यवान है। हरेक की शक्ति व अनुभव है। मैं उस शक्ति को जगाना चाहता हूं। मैं उस शक्ति को जोड़ना चाहता हूं और उस शक्ति के माध्यम से राष्ट्र कल्याण की गति को तेज करना चाहता हूं और मैं करके रहूंगा।
14. हमारे महापुरुषों ने आजादी दिलाई, क्या उनके सपनों के भारत के लिए हमारा भी कोई कर्तव्य है या नहीं, हमारा भी कोई राष्ट्रीय चरित्र है या नहीं है, उस पर अब गंभीरता से सोचने का समय आ गया है।
15. क्या सवा सौ करोड़ देशवासियों का मंत्र नहीं होना चाहिए कि जीवन का हर कदम देश हित में हो।
16. हर चीज अपने लिए नहीं होती। कुछ चीजें देश के लिए भी हुआ करती है। मेरा क्या मुझे क्या इससे ऊपर उठकर करके देश हित के काम के लिए मैं आया हूं।
17. बेटी से तो सैकड़ों सवाल मां-बाप पूछते हैं, क्या कभी मां-बाप ने अपने बेटों से पूछने की हिम्मत की है। आखिर बलात्कार करने वाला किसी न किसी का बेटा तो है।
18. शस्त्र छोड़ शास्त्र के रास्ते पर चलने का नेपाल उत्तम उदाहरण देता है और विश्व में हिंसा के रास्ते पर गये नौजवानों को प्रेरणा दे सकता है।
19. आजादी के बाद भी कभी जातिवाद का जहर कभी साम्प्रदायिकता का जहर, ये पापाचार कब तक चलेगा? किसका भला होगा?
20. मैं देश के नौजवानों से आह्वान करता हूं कि जातिवाद का जहर हो, साम्प्रायिकता का जहर हो, प्रांतवाद का जहर हो ऊँच-नीच का भाव ये देश को आगे बढ़ाने में रुकावट है। एक बार मन में तय करो 10 साल के लिए मोरिटोरियम ट्राई करो 10 साल तक हम इन सारे तनावों से मुक्त समाज की ओर जाना चाहते हैं।
21. राष्ट्रमंडल खेलों में 64 हमारे खिलाड़ी मेडल लेकर आए, उसमें 29 बेटियां है इस बात पर गर्व करें उन बेटियों के लिए।
22. देश के आने-जाने के लिए दो पटरी हैं, गुड गवर्नेंस एण्ड डेवलपमेंट उसी को लेकर आगे चल सकते हैं। उसी पर चलने का इरादा लेकर के हम आगे चलना चाहते हैं।
23. करोड़ों-करोड़ों परिवार हैं, जिनके पास मोबाइल फोन तो हैं, लेकिन बैंक अकाउंट नहीं है। ये स्थिति हमें बदलनी है।
24. सरकारी सेवा में जुडे हुए लोग जॉब नहीं कर रहे हैं, सेवा कर रहे हैं, सर्विस कर रहे हैं इस बात को पुनर्जीवित करना है।
25. प्रधानमंत्री जन-धन योजना के माध्यम से हम देश के गरीब लोगों को बैंक अकाउंट की सुविधा से जोड़ना चाहते हैं।
26. प्रधानमंत्री जन-धन योजना के तहत जो भी अकाउंट खोलेगा उसको डेबिट कार्ड दिया जाएगा और डेबिट कार्ड के साथ एक लाख रुपये का बीमा मिल सकता है।
27. हमारा देश विश्व का सबसे नौजवान देश है। देश को विकास की ओर आगे बढ़ाना है तो स्किल डेवलपमेंट हमारा मिशन है।
28. आप कल्पना कीजिए सवा सौ करोड़ देशवासी एक कदम आगे चलें तो ये देश सवा सौ करोड़ कदम आगे चला जाएगा।
29. मैं ऐसे नौजवानों को भी तैयार करना चाहता हूं, जो जॉब क्रिएटर हों
30. अगर हमें नौजवानों को ज्यादा से ज्यादा रोजगार देना है तो हमें मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर को बढ़ावा देना होगा।
31. हमारे पास स्किल है, टैलेंट है, डिसिप्लीन है। कुछ कर गुजरने का इरादा है। हम विश्व को सामूहिक अवसर देना चाहते है।..... Come & make in India. ताकत है हमारे देश में, आइए मैं निमंत्रण देता हूं।
32. अन्न के भंडार भर कर के मेरा किसान भारत मां की उतनी ही सेवा करता है, जैसे जवान भारत मां की रक्षा करता है। यह भी देश सेवा है।
33. नौजवान एक फैसला करें कि मैं अपने छोटे-छोटे काम के द्वारा मेरे देश को इम्पोर्ट करने वाली कम से कम एक चीज ऐसी बनाऊंगा जो देश को कभी इम्पोर्ट ना करनी पड़े।
34. विश्व में भारत की नई पहचान बनाने का रास्ता हमारे आईटी प्रोफेशन के नौजवानों ने प्रशस्त कर दिया है।
35. देश के लिए हमारा सपना है डिजीटल इंडिया। जब मैं डिजीटल इंडिया कहता हूं तब यह बड़े लोगों की बात नहीं है, यह गरीब के लिए है।
36. हम इलेक्ट्रॉनिक डिजिटल इंडिया का सपना लेकर के इलेक्ट्रॉनिक गुड्स की मैन्युफैक्चरिंग का सपना लेकर के चलें। और स्वनिर्भर बन जाएं तो देश को कितना बड़ा लाभ हो सकता है।
37. एक जमाना था जब कहा जाता था कि रेलवे देश को जोड़ती है। ऐसा कहा जाता था मैं कहता हूं आज आई-टी

देश को जन-जन को जोड़ने की ताकत रखती है।

38. हम टूरिज्म को बढ़ावा देना चाहते हैं। टूरिज्म से गरीब से गरीब व्यक्ति को रोजगार मिलता है। चना बेचने वाला, ऑटो रिक्शा वाला, पकौड़े बेचने वाला और चाय बेचने वाला भी कमाता है। जब चाय बेचने वाले की बात आती है तो मुझे अपनापन महसूस होता है।

39. राष्ट्र के चरित्र के रूप में भी सबसे बड़ी रुकावट है- हमारे चारों और दिखाई दे रही गंदगी। मैंने यहां आकर के सरकार में सबसे पहला काम सफाई का किया। लोगों के आश्चर्य हुआ कि क्या यह प्रधानमंत्री का काम है। मेरे लिए तो बहुत बड़ा काम है।

40. अगर सवा सौ करोड़ देशवासी यह तय कर लें कि मैं कभी गंदगी नहीं फैलाऊंगा, तो दुनिया की कौन सी ताकत है। जो हमारे शहर गांव को आकर के गंदा कर सके।

41. हम तय करें कि 2019 में जब महात्मा गांधी के 150वीं जयंती मनाएंगे, हमारा गांव, हमारा शहर, हमारा देश, हमारा मोहल्ला, हमारे स्कूल, हमारे मंदिर, हमारे अस्पताल, सभी क्षेत्र में गंदगी का नामोनिशान नहीं रहने देंगे, ये सरकार से नहीं होता है। जनभागीदारी से होता है।

42. आज हमारी माताओं बहनों को खुले में शौच के लिए जाना पड़ता है क्या हम ये चाहते हैं? क्या ये हम सबका दायित्व नहीं है? हमें कम से कम शौचालय का प्रबंध करना चाहिए।

43. मुझे स्वच्छ भारत का अभियान इसी 2 अक्टूबर से आरम्भ करना है और चार साल के भीतर हम इस काम को आगे बढाना चाहते हैं।

44. एक काम तो मै आज ही शरू करना चाहता हूं वो है हिंदुस्तान के सभी स्कूलों में टॉयलेट हो, बच्चियों के लिए अलग टॉयलेट हो तभी तो हमारी बच्चियां स्कूल छोड़कर के भागेंगी नहीं और मैं एमपी फंड का उपयोग करने वाले सांसदों से आग्रह करता हूं कि एक साल के लिए अपना धन स्कूलों में टॉयलटों को बनाने में खर्च कीजिए।

45. अगले 15 अगस्त को जब हम यहां खड़े हों तो विश्वास के साथ खड़े हों, तब हिंदुस्तान का कोई स्कूल ऐसा ना हो जहां बच्चे और बच्चियों के लिए अलग टॉयलेटों का निर्माण होना बाकी हो।

46. मैं आज सांसद के नाम से एक योजना घोषित करता हूं। 'सांसद आदर्श ग्राम योजना' हर सांसद 2016 तक अपने इलाके में एक गांव को आदर्श गांव बनाए।

47. 2016 के बाद जब 2019 में सांसद चुनाव के लिए जाए उसके पहले और दो गांवों को करे और 2019 के बाद हर सांसद 5 साल के कार्यकाल में कम से कम पांच आदर्श गांव अपने इलाके में बनाएं।

48. 11अक्टूबर जयप्रकाश नारायण जी की जयंती पर इस सांसद आदर्श ग्राम योजना का कम्पलीट ब्लू प्रिंट सभी सांसदों और सभी राज्य सरकारों के सामने रख दूंगा।

49. हमारे संघीय ढांचे को विकास की धरोहर के रूप में काम लेना मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री की टीम फोर्मेशन हो, केंद्र और राज्य की टीम बनकर आगे चलें, तो इसलिए अब प्लानिंग कमीशन के नए रंगरूप को सोचना पड़ेगा।

50. राज्य सरकारों को, संघीय ढांचे को ताकतवर बनाना, एक ऐसे नए रंगरूप के साथ, नए शरीर नई आत्मा के साथ, नई दिशा के साथ, नए विश्वास के साथ नए इंस्टिट्यूशन का हम निर्माण करेंगे। बहुत ही जल्द योजना आयोग की जगह पर यह नए इंस्टिट्यूट काम करें, दिशा में हम आगे बढ़ने वाले है

51. भारत की दैवीय शक्ति भारत की आध्यात्मिक विरासत विश्व कल्याण के लिए अहम भूमिका निभाएगी। इस प्रकार के भाव महर्षि अरविंद ने व्यक्त किए थे।

52. स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था कि फिर एक बार मेरी भारत माता जाग चुकी है। मेरी भारत माता जगत गुरु के स्थान पर विराजमान होगी। हर भारतीय मानवता के कल्याण के काम आएगा।

53. क्यों न हम सार्क देशों के सभी साथी को मिलाकर के गरीबी के खिलाफ लड़ाई-लड़ने की योजना बनाएं। हम मिलकर लड़ाई लड़े। गरीबी को परास्त करें।

54. मैं भूटान गया, नेपाल गया, सार्क देशों के सभी महानुभाव शपथ समारोह में आए। एक बहुत अच्छी हमारी शरूआत हुई। निश्चित रूप से अच्छे परिणाम मिलेंगे।

55. मैं आपको विश्वास दिलाता हूं अगर आप 12 घंटे काम करेंगे तो मैं 13 घंटे काम करूंगा। क्यों, क्योंकि मैं प्रधानमंत्री नहीं, प्रधान सेवक के रूप में आपके बीच आया हूं। मैं शासक के रूप में नहीं सेवक के रूप में सरकार लेकर आया हूं।

56. मैं देश के सुरक्षाबलों को, अर्धसैनिक बलों को, देश की सभी सिक्योरिटी फोर्सेस को मां भारती की रक्षा के लिए उनकी तपस्या, उनके त्याग, उनके बलिदान, उनका गौरव करता हूं। ■

प्रधानमंत्री के स्वतंत्रता दिवस भाषण पर विशेष लेख

उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ता भारत

✍ डॉ. शिव शक्ति बक्सी

स्वतंत्रता दिवस पर लालकिले की प्राचीर से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए भारत की नियति को बदल डालने में लोगों की आस्था की पुष्टि करते हुए एक नए विश्वास और आशा की किरण जगाई। राष्ट्र के नाम सम्बोधित प्रधानमंत्री के भाषण को लोगों ने मुग्धकारी भाव से सुनते हुए उनके वाइब्रेंट इंडिया के सपने को साकार होने की दृष्टि को समझाने का प्रयास किया। उनका यह भाषण लोगों के लिए वास्तविक अर्थ रखता है क्योंकि वे सीधे लोगों के सामने उन्हीं के मन की भावनाओं को उजागर करते हुए उनकी चिंताओं और उनके भविष्य की योजनाओं में उन्हें भागीदार बना रहे थे। पूरा राष्ट्र यह देख कर रोमांचित हो उठा कि उनका अपना प्रधानमंत्री बुलेटप्रूफ शीशे को हटा कर उनसे सीधी बात कर रहे हैं और अपने भाषण के बाद बच्चों के साथ घुलमिल रहे हैं। प्रधानमंत्री के भाषण ने एक दृढ़ भारत के उदय की बात कही, जो अपने वर्तमान में संघर्ष करते हुए भविष्य पर भी नजर रखे हुए हैं। उन्होंने अपना अलिखित भाषण दिया जबकि पहले लिखित भाषण पढ़ने की परम्परा बनी हुई थी, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने सीधे भारत के लोगों के साथ सीधा सम्पर्क साधा, जिससे उनकी दूरदृष्टि, विश्वसनीयता की प्रशंसा तो हुई ही और साथ ही उन्हें भरोसा भी मिला कि वे अपने वायदे निभाने के प्रति वचनबद्ध हैं।

यह एक ऐसा अवसर था जो केवल सरकारी समारोह के दायरे तक सीमित नहीं रहा। लोगों ने पूर्ण सच्ची भावना से लोकतांत्रिक ढंग से स्वतंत्रता दिवस मनाने का आनंद उठाया। वास्तव में 1984 के बाद ऐसा पहली बार हुआ है जब सुरक्षा और संरक्षण की आड़ में इस समारोह में लोगों की भागीदारी को रोका नहीं गया। बुलेटप्रूफ शीशे को हटाने की परम्परा तोड़ने पर जनता का हर वर्ग भाव-विह्वल हो उठा क्योंकि लोगों को स्वतंत्रतापूर्वक समारोह ढंग से मनाने की आजादी मिल सकी। पूरा राष्ट्र प्रधानमंत्री को सुनने तथा उनके भावी रोडमैप को जानने के लिए बेताब था। प्रधानमंत्री अपनी शैली में भाषण देते हुए लोगों के साथ ऐसा बंधन स्थापित कर लिया जिससे प्रधानमंत्री ने राष्ट्रनिर्माण प्रक्रिया को राष्ट्रीय आंदोलन की भावना से जुड़ने का आह्वान किया। उन्होंने स्वयं को प्रधानमंत्री न होकर प्रधान सेवक कहकर लोगों का मन मोह लिया जिसका स्वागत देश भर के लोगों ने किया और उनकी विनम्रता की भारी सराहना की और कहा लोकतंत्र को सजग रखने की भावना पुन: जीवित हुई है।

स्वतंत्रता दिवस पर लालकिले की प्राचीर से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए भारत की नियति को बदल डालने में लोगों की आस्था की पुष्टि करते हुए एक नए विश्वास और आशा की किरण जगाई। राष्ट्र के नाम सम्बोधित प्रधानमंत्री के भाषण को लोगों ने मुग्धकारी भाव से सुनते हुए उनके वाइब्रेंट इंडिया के सपने को साकार होने की दृष्टि को समझाने का प्रयास किया। उनका यह भाषण लोगों के लिए वास्तविक अर्थ रखता है क्योंकि वे सीधे लोगों के सामने उन्हीं के मन की भावनाओं को उजागर करते हुए उनकी चिंताओं और उनके भविष्य की योजनाओं में उन्हें भागीदार बना रहे थे।

समाज को संदेश-महिलाओं पर बल

प्रधानमंत्री के भाषण में समाज को संदेश दिया गया। उनका भाषण इस रूप में अद्‌भुत था क्योंकि आज तक किसी प्रधानमंत्री ने शायद ही स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सामाजिक मुद्‌दों के बारे में किसी प्रकार की चिंता की हो। उन्होंने राष्ट्र की चेतना को झकझोर रख दिया और विशेष रूप से यह महिलाओं के बारे में रहा। उन्होंने बलात्कार के बारे में कड़े से कड़े शब्दों में भर्त्सना करते हुए लड़कों और लड़कियों के बीच किसी प्रकार का भेदभाव न रखने को कहा। उनका कहना था कि ''माता-पिता लड़कियों से तो हजारों सवाल पूछते हैं, परन्तु क्या किसी माता-पिता ने यह साहस दिखाया है कि उनका बेटा कहां जा रहा है, वह क्यों बाहर जा रहा है, और उनकी कैसी मित्र-मंडली है?

आखिरकार, सभी बलात्कारी किसी न किसी के बेटे तो होते ही हैं।'' उन्होंने सचमुच एक प्रासंगिक विषय उठाया कि जब तक हम समान समाज प्रणाली स्थापित नहीं करेंगे तो बलात्कार जैसे घृणित अपराधों पर लगाम नहीं लगाई जा सकती है। उसी तरह, उन्होंने माता-पिताओं की इस जिम्मेदारी पर भी आगाह किया कि उन्हें अपने बच्चों पर अपनी निगाह रख कर समाज को 'माओवादी' जैसी विनाशकारी घटनाओं से बचाना चाहिए। देश में पक्षपातपूर्ण लिंगभेद की तरफ इशारा करते हुए उन्होंने डाक्टरों और माताओं से अपील की कि उन्हें कन्या भ्रूण हत्या को निरूत्साहित करना चाहिए। उन्होंने राष्ट्रमण्डल खेलों में इस सच्चाई को सामने रखा कि 64 मेडलों में से 29 मेडल लड़कियों ने जीते हैं। उन्होंने यह भी कहा है कि कई मामलों में लड़कियां अपने माता-पिताओं की कहीं बेहतर ढंग से सेवा करती हैं। उन्होंने शौचालय न होने का सवाल भी उठाया और कहा कि इसके परिणामस्वरूप महिलाओं को बेहद परेशानियों का सामना करना पड़ता है जिससे शारीरिक बीमारियां उत्पन्न होती हैं और उनकी गरिमा पर चोट पहुंचती हैं। बालिका शौचालय न होने पर छात्राओं को स्कूल से हटने पर भी मजबूर हो जाना पड़ता है। अपने स्वतंत्रता दिवस भाषण पर इस प्रकार के सवाल उठाकर उन्होंने न केवल अनेक मुद्दों की महत्ता बढ़ा दी, बल्कि इससे समाज एक निर्णायक वर्ग को भी संवेदनशील बनाने का प्रयास किया है जिससे आने वाले दिनों में वे महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं और उससे हमारी सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं को उनका सही स्थान मिल सकता है।

हिंसा पर स्थगन

अपने भाषण में प्रधानमंत्री ने हिंसा पर साफ-साफ अपनी बात कही। उन्होंने माता-पिताओं से अपील की कि उन्हें अपने बच्चों को हिंसा के गुमराही रास्ते से बचाना चाहिए जो माओवादी या आतंकवादी के नाम पर ऐसी हिंसात्मक गतिविधियों में जुड़ जाते हैं और निर्दोष लोगों का खून बहता है, जबकि होना यह चाहिए कि उनके कंधों पर बन्दूकें न होकर 'हल' होना चाहिए। उन्होंने नेपाल का उदाहरण दिया जहां युवाओं ने हिंसा का रास्ता छोड़कर अब वे अपने देश का नया संविधान लिख रहे हैं। यह प्रेरणा पूरे विश्व में फैलनी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि साम्प्रदायिक तनाव से देश का विभाजन हुआ। और साम्प्रदायिकता तथा जातिवाद का जहर पूरे राष्ट्र को तबाह कर रहा है। उन्होंने पूछा कि आखिर कब तक यह रोग चलता रहेगा। शांति, एकता, सद्भाव और भाईचारा की आवश्यकता पर बल देते हुए प्रधानमंत्री ने जातिवाद, सम्प्रदायवाद, क्षेत्रवाद और सामाजिक तथा आर्थिक संघर्षों पर दस वर्षों के लिए स्थगन की अपील की क्योंकि ये सभी रूकावटें बनकर प्रगति का रास्ता रोक देते हैं। इस अपील का लोगों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा क्योंकि देश ने विभाजनकारी मुद्दों को पीछे छोड़कर विकास के मार्ग पर आगे बढ़ने का संकल्प कर लिया है।

सुशासन और विकास

सुशासन और विकास के अपने मनचाहे विषय पर बोलते हुए उन्होंने यह बात कह कर सरकारी कर्मचारियों में जिम्मेदारी का भाव पैदा करने की कोशिश की कि निजी कर्मचारियों के विपरीत, जिन्हें 'जॉब' पर समझा जाता है, उन्हें 'सर्विस' में माना जाता है। उन्होंने अपने भाषण में अपनी यह इच्छा भी प्रगट की कि हमें एक नई कार्य-संस्कृति के वातावरण का निर्माण करना चाहिए और इस संस्कृति में लोगों को समय पर कार्यालय पहुंचना चाहिए और ईमानदारी से अपनी ड्यूटी निभानी चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है कि वह देश को आगे ले जाए और यदि प्रत्येक नागरिक एक कदम आगे बढ़ने को तैयार हो जाता है तो देश 125 करोड़ कदम आगे बढ़ सकता है। उन्होंने राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण पर लोगों से अपील की जिससे ही सुशासन और विकास का युग आ सकता है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र का मतलब इतना ही नहीं है कि हम एक सरकार का चुनाव कर दें बल्कि राष्ट्रीय हित के लिए सरकार भागीदारी के बंधन से जुड़कर काम करे।

'मेक-इन-इंडिया-मेड-इन-इंडिया' और डिजीटल इंडिया

उन्होंने एक नई योजना प्रधानमंत्री जन-धन योजना की घोषणा करते हुए समाज के निर्धनतम व्यक्ति को जोड़ा और कठिनाई के समय में एक लाख रुपए का बीमा देना भी सुनिश्चित किया, जिसके साथ एक बैंक खाता और

सुशासन और विकास के अपने मनचाहे विषय पर बोलते हुए उन्होंने यह बात कह कर सरकारी कर्मचारियों में जिम्मेदारी का भाव पैदा करने की कोशिश की कि निजी कर्मचारियों के विपरीत, जिन्हें 'जॉब' पर समझा जाता है, उन्हें 'सर्विस' में माना जाता है। उन्होंने अपने भाषण में अपनी यह इच्छा भी प्रगट की कि हमें एक नई कार्य-संस्कृति के वातावरण का निर्माण करना चाहिए।

'डेबिट कार्ड' भी साथ में रहेगा। इसमें उन्होंने राष्ट्र के सामने एक 'स्किल्ड इंडिया' का अपना विजन पेश किया जिसमें युवा लोगों को इष्टतम रूप से राष्ट्र निर्माण प्रक्रिया में अपना योगदान देने का अवसर मिलेगा। बदलते विश्व के साथ कदम से कदम मिलाने की जरूरत को ध्यान में रखते हुए उन्होंने मैन्युफैक्चरिंग सेक्टरों को प्रोत्साहित करने पर भी बल दिया, जिससे देश में रोजगार के अवसर की गारंटी मिल सकेगी। उन्होंने पूरे विश्व के लोगों से अपील की कि "Come, make in India" और युवा लोगों से इस महत्वाकांक्षा में अदला-बदली करने की इच्छा व्यक्त की ताकि हम भारत में 'चीजों' के माध्यम 'Made in India' के ब्रांड को विश्वभर में फैला सकें जिसमें 'zero-Defect, Zero-effect' का असर साफ दिखाई दे। 'डिजीटल इंडिया' के अपने स्वप्न के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा कि यह कोई संभ्रांत लोगों के लिए नहीं है, बल्कि यह समाज के गरीब वर्ग के लिए है, जिन्हें इस क्रांतिकारी कदम के माध्यम से टेलीमेडिसीन और दूरस्थ शिक्षा सुविधाएं प्राप्त हो सकें। उन्होंने कहा कि 'डिजीटल इंडिया' से ही 'ई-गवर्नेंस' की सुविधा मिल सकती है, जिससे आसान गवर्नेंस, प्रभावकारी गवर्नेंस और सस्ती गवर्नेंस का रास्ता खुल सकता है।

प्रधानमंत्री द्वारा प्रस्तुत इस विजन ने न केवल युवा लोगों को करिश्माई भाव का अनुभव कराया बल्कि भारत के भविष्य के बारे में उनकी आस्था को परिपुष्ट किया। अब वे पूरे विश्वास से कह सकते हैं कि यही वह नेता है जो सुनिश्चित कर सकता है कि आने वाले दिनों में भारत विश्व में न पीछे रहेगा और विश्व में समकक्ष कदम बढ़ाते हुए आगे बढ़ता ही जाएगा।

स्वच्छता अभियान

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने न केवल एक विकसित देश बनाने का संकल्प लिया है बल्कि साफ-सुथरा, चमकता-दमकता और स्वच्छ बनाने को भी अपनी प्राथमिकताओं को जोड़ा है। जिस प्रकार से उन्होंने स्वच्छता अभियान की शुरुआत की है, उसे भारत के सभी लोगों ने सराहा है। लोगों को स्मरण कराते हुए उन्होंने कहा कि राष्ट्र वर्ष 2019 में महात्मा गांधी का 150वां जन्म दिवस मनाने जा रहा है। उन्होंने कहा कि ''महात्मा गांधी को तहे दिल से स्वच्छता और साफ-सुथरा पर्यावरण भाता था। क्या हम यह संकल्प नहीं ले सकते हैं कि हम अपने गांव, नगर गली, क्षेत्र, स्कूल, मंदिर, अस्पताल को स्वच्छ अवश्य बनाएंगे और 2019 तक हम महात्मा गांधी के 150वां जन्म दिवस के अवसर पर पूरी तरह से हर स्थल को स्वच्छ बनाकर रखेंगे?'' उन्होंने कहा कि भले ही किसी प्रधानमंत्री के भाषण में यह विषय अत्यंत साधारण सा लगता हो, परन्तु सरकार बनाने के बाद मेरा ख्याल स्वच्छता पर ही गया है। जिस प्रकार से घरों और स्कूलों में शौचालय न होने से हमारी महिलाओं को अत्यंत कष्ट भोगना पड़ता है, अत: मैं सभी सांसदों से कहना चाहूंगा कि वे एक वर्ष तक अपनी सांसद निधि का प्रयोग शौचालय बनाने में करें और कार्पोरेट घरानों से आग्रह है कि वे सीएसआर के अन्तर्गत आने वाले धन का इस्तेमाल स्कूलों में लड़कियों के लिए शौचालय के निर्माण में लगा दें। उन्होंने आह्वान किया कि इस काम को एक अभियान की शक्ल दे दी जाए और जो काम वर्षों में किया जाता है, उसे एक वर्ष में पूरा कर लिया जाए। बहुत से कार्पोरेट घरानों ने स्कूलों में लड़कियों के शौचालय बनाने के लिए बड़ी मात्रा में धन देने का भी काम किया है। इससे सिद्ध होता है कि यदि नेतृत्व ठान ले तो किसी भी काम को शीघ्रातिशीघ्र पूरा किया जा सकता है।

प्रधानमंत्री ने एक नई योजना शुरु करने की घोषणा की जिसकी कार्ययोजना को 11 अक्टूबर को लोक-नायक जयप्रकाश के जन्म दिवस पर पेश किया जाएगा। उन्होंने एक और बात कही कि अधिकांश योजनाओं का नाम या तो प्रधानमंत्री या देश के अन्य महान नेताओं के नाम पर रखा जाता है, परन्तु ऐसी कोई योजना नहीं है जो सांसदों के नाम पर हो। अत: उन्होंने कहा कि सांसद हर वर्ष एक गांव को अपनाएं और उसे आदर्श गांव बनाकर उसका विकास करें।

सांसद आदर्शग्राम योजना

प्रधानमंत्री ने एक नई योजना शुरु करने की घोषणा की जिसकी कार्ययोजना को 11 अक्टूबर को लोक-नायक जयप्रकाश के जन्म दिवस पर पेश किया जाएगा। उन्होंने एक और बात कही कि अधिकांश योजनाओं का नाम या तो प्रधानमंत्री या देश के अन्य महान नेताओं के नाम पर रखा जाता है, परन्तु ऐसी कोई योजना नहीं है जो सांसदों के नाम पर हो। अत: उन्होंने कहा कि सांसद हर वर्ष एक गांव को अपनाएं और उसे आदर्श गांव बनाकर उसका विकास करें। उन्होंने राज्य सरकारों से भी अपील की कि वे अपने विधानसभा सदस्यों को इसी प्रकार की योजनाएं बनाने के लिए

प्रोत्साहित करें, जिससे देश के विकास के लिए अत्यंत सकारात्मक वातावरण बन सकेगा। एक आदर्श गांव की प्रेरणा इन गांवों के सन्निकट गांवों उसी प्रकार की विकासात्मक गतिविधियां बनाने के लिए प्रेरित करेगी जिससे विकास के लिए स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का वातावरण बनेगा। इससे विभिन्न एनजीओ और कार्पोरेट निकायों को भी गांवों को अपनाने का प्रोत्साहन मिलेगा जिससे ऐसे प्रयासों में तेजी आएगी तथा विकास की गति तेज होती जाएगी।

आर्गेनिक एकता की अवधारणा

प्रधानमंत्री ने आम-सहमति के युग की शुरुआत करने की आवश्यकता पर बल देकर ठीक ही किया है क्योंकि देश को अब आपसी झगड़े-फसाद से आगे बढ़ना पड़ेगा। **'संगच्छध्वं-संवदत्वं'** की प्राचीन अवधारणा का स्मरण करते हुए उन्होंने कहा कि लोकतंत्र प्रभावी तब ही हो सकता है जब हम हर एक की भागीदारी इसमें सुनिश्चित करेंगे। इस अवधारणा को और अधिक स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि उन्होंने कभी भी संख्या बल के आधार पर शासन करने की इच्छा नहीं रखी तथा आम-सहमति की राजनीति पर विश्वास किया जिसका जीवंत उदाहरण हाल ही में सम्पन्न हुआ संसदीय सत्र है। उन्होंने इस बात पर दुःख व्यक्त किया कि उनका दिल्ली का अनुभव ठीक नहीं रहा क्योंकि यहां सरकार के विभिन्न अंगों के बीच ही अनेक झंझट फंसे हुए हैं। उन्होंने कहा कि स्थिति इतनी खराब है कि एक विभाग दूसरे विभाग के विरुद्ध है तथा एक ही सरकार के दो विभाग आपस में केवल झगड़ ही नहीं रहे बल्कि न्यायालय तक का दरवाजा खटखटा रहे हैं। क्या इस तरह की खींच-तान देश को आगे ले जा सकता है-उन्होंने पूछा।

लाल किले के प्रचीर से प्रधानमंत्री के भाषण से एक सकारात्मक वातावरण का निर्माण हुआ है। उनकी छोटी-छोटी बातें, जो साधारण सी दिखती हैं, आने वाले दिनों में बड़े परिवर्तनों का आगाज करेंगी। असल में इससे देश में एक नई प्रकार के कार्य-संस्कृति का निर्माण होगा जो राष्ट्रीय संकल्प में परिवर्तित होगा। उन्होंने संसद एवं अन्य लोकतांत्रिक संस्थाओं की गरिमा बहाल कर लोकतांत्रिक व्यवस्था को सच्चे अर्थों में जागृत किया है।

इस स्थिति को ठीक करने के लिए उन्होंने कहा कि कदम उठाये गए हैं ताकि सरकार टूटी-फूटी इमारत ना दिखकर एक आर्गेनिक इकाई के रूप में दिखे जो एक लक्ष्य, एक मस्तिष्क, एक ऊर्जा और एक दिशा में आगे बढ़े।

राष्ट्र की नियति

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का लाल किले के प्राचीर से दिया गया भाषण अनेक मायनों में अनोखा था परन्तु सबसे अधिक अभिनव था उनका 'राष्ट्र की नियति' पर दृढ़ विश्वास। इस देश के ऋषि-महर्षियों के वचनों पर विश्वास व्यक्त करते हुए उन्होंने महर्षि अरविन्द एवं स्वामी विवेकानन्द को उद्धृत किया जिन्होंने कहा था कि भारत की नियति विश्व कल्याण के लिए वृहत भूमिका निभाने में निहित है। उन्होंने कहा कि भारत के लोगों की भूमिका अपनी समस्याएं सुलझाने तक ही सीमित नहीं है बल्कि उन्हें इससे आगे देखते हुए विश्व कल्याण का दायित्व भी अपने कंधों पर लेने के लिए तैयार होना पड़ेगा। वास्तव में यह एक विहंगम दृष्टि थी जिसमें प्रधानमंत्री ने उस आत्मविश्वास का परिचय दिया जिससे भारत विश्व में अपनी वृहत्तर भूमिका निभाने को प्रतिबद्ध प्रतीत होता है। भारत को केवल अपने तात्कालिक समस्याओं में उलझकर नहीं रह जाना है बल्कि उसे विश्व के दूसरे भागों की समस्याओं का भी समाधान करना पड़ेगा। उन्होंने महर्षि अरविन्द को उद्धृत किया जिन्होंने कहा था, "मुझे पूरा विश्वास है कि भारत की दैवीय शक्तियाँ और आध्यात्मिक विरासत विश्व कल्याण के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे।" स्वामी विवेकानन्द को उन्होंने उद्धृत किया जिन्होंने कहा था, "मैं अपने आंखों के सामने फिर से मां भारती को जागते हुए देख रहा हूँ। मेरी माँ भारती विश्व गुरु के रूप में आसीन हैं। हरेक भारतीय मानवता की कल्याण के लिए अपनी सेवा देंगे। भारत की यह विरासत विश्व कल्याण के लिए काम आयेगी।" उन्होंने कहा कि भारत की एक नियति है और यह नियति विश्व का कल्याण करने की है।

लाल किले के प्रचीर से प्रधानमंत्री के भाषण से एक सकारात्मक वातावरण का निर्माण हुआ है। उनकी छोटी-छोटी बातें, जो साधारण सी दिखती हैं, आने वाले दिनों में बड़े परिवर्तनों का आगाज करेंगी। असल में इससे देश में एक नई प्रकार के कार्य-संस्कृति का निर्माण होगा जो राष्ट्रीय संकल्प में परिवर्तित होगा। उन्होंने संसद एवं अन्य लोकतांत्रिक संस्थाओं की गरिमा बहाल कर लोकतांत्रिक व्यवस्था को सच्चे अर्थों में जागृत किया है। साथ ही हर नागरिक को सरकार की योजनाओं से जोड़ने की अपनी क्षमता से हर नागरिक को राष्ट्रीय निर्माण की प्रक्रिया में भागीदार बना रहे हैं। असल में देश प्रधानमंत्री के नेतृत्व में अपनी नियति के आलिंगन को तैयार है।■

सक्षम नेतृत्व का उदय

✍ ए. सूर्यप्रकाश

देश में 25 वर्ष पहले जब गठबंधन युग की शुरुआत हुई थी तो हर कहीं यही विलाप था कि भारतीय राष्ट्र-राज्य दिशाहीन और नेतृत्वहीन है। यह विलाप अब बंद होना चाहिए। नरेंद्र मोदी से घृणा करने वालों को छोड़कर बाकी वह तमाम लोग जिन्होंने प्रधानमंत्री को 15 अगस्त को लाल किले की प्राचीर से सुना वे इस बात से सहमत होंगे कि राष्ट्र को एक ऐसा व्यक्ति मिला है जो न केवल सबसे आगे रहकर नेतृत्व करना चाहता है, बल्कि देश के उन करोड़ों लोगों को प्रेरित और उत्साहित करना चाहता है जो भारत निर्माण के काम में आधुनिकतावादी प्रवृत्तिके तहत सहभागिता निभाने को इच्छुक हैं। मोदी पहले प्रधानमंत्री हैं जो भारत को जगाने के लिए कठोर परिश्रम करने की बात कह रहे हैं और भारत के 130 करोड़ नागरिकों को उन समस्याओं का समाधान करने के लिए आगे आने को कह रहे हैं जिनसे हमारा देश त्रस्त है। वास्तव में यह दुखद है कि देश के लाखों स्कूलों, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में शौचालय जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। इसके परिणामस्वरूप लाखों की संख्या में लड़कियों को स्कूल छोड़ने के लिए विवश होना पड़ता है। मोदी सरकार ने इस काम को अब शीर्ष प्राथमिकता देते हुए संसद सदस्यों से सांसद निधि का धन भारत के स्कूलों में लड़कों और लड़कियों के लिए अलग शौचालय बनाने के लिए खर्च करने को कहा है। मोदी ने इसके लिए समयसीमा तय करते हुए इस काम को 15 अगस्त, 2015 तक पूरा करने को कहा है। यह बेहद महत्वाकांक्षी कार्य है, लेकिन उनकी प्रतिबद्धता और प्रेरित करने की क्षमता को देखते हुए मोदी निश्चित ही इस लक्ष्य को पूरा करने में समर्थ हैं। सवाल है क्या वह इस लक्ष्य को हासिल करने में समर्थ हो सकेंगे?

प्रधानमंत्री के लिए यह व्यक्तिगत उपलब्धियों से कहीं अधिक बड़ा कार्य है। इससे भारतीयों को नई प्रेरणा मिलेगी और उनमें खुद पर विश्वास पैदा होगा। इस तरह वे देश के समक्ष मौजूद कई अन्य समस्याओं को हल करने में समर्थ हो सकेंगे। दूसरा महत्वपूर्ण मुद्दा अथवा विषय स्वच्छता का है, जिसे प्रधानमंत्री मोदी ने लाल किले की प्राचीर से देशवासियों के समक्ष प्रस्तुत किया। मोदी अक्सर कहते हैं कि भारत को पर्यटन केंद्र बनाने की दृष्टि से असीम संभावनाएं हैं। उन्होंने अपने भाषण में इसे पुन: दोहराया और जोर देकर कहा कि यदि हम पर्यटकों को आकर्षित करना चाहते हैं तो हमें सबसे पहले अपने कस्बों और शहरों को साफ-स्वच्छ करना होगा। मोदी की जिस बात ने लोगों को सबसे अधिक प्रभावित किया वह था महिलाओं की गरिमा का उल्लेख। मोदी ने कहा कि महिलाओं की गरिमा और उनकी सुरक्षा तब तक सुनिश्चित नहीं की जा सकती जब तक कि प्रत्येक घर में शौचालय की व्यवस्था नहीं हो जाती। उन्होंने बिगड़ते लिंगानुपात और महिलाओं के खिलाफ यौन हिंसा का भी जिक्र किया। इसके लिए उन्होंने बताया कि किस तरह सभी परिवारों को बेटों के चाल-चलन पर भी निगाह रखनी चाहिए। उन्होंने आदर्श गांवों के विकास की योजना की भी घोषणा की, जिसे सांसदों द्वारा पूरा कराया जाएगा। कुछ लोगों ने मोदी की आलोचना की, जिसमें कांग्रेस पार्टी भी शामिल है। संभवत: उसे उनके भाषण में कमियों का इंतजार था। कांग्रेस ने मोदी के भाषण की आलोचना करते हुए तीव्र प्रतिक्रिया दी कि स्वतंत्रता दिवस जैसे

मोदी पहले प्रधानमंत्री हैं जो भारत को जगाने के लिए कठोर परिश्रम करने की बात कह रहे हैं और भारत के 130 करोड़ नागरिकों को उन समस्याओं का समाधान करने के लिए आगे आने को कह रहे हैं जिनसे हमारा देश त्रस्त है। वास्तव में यह दुखद है कि देश के लाखों स्कूलों, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में शौचालय जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। इसके परिणामस्वरूप लाखों की संख्या में लड़कियों को स्कूल छोड़ने के लिए विवश होना पड़ता है। मोदी सरकार ने इस काम को अब शीर्ष प्राथमिकता देते हुए संसद सदस्यों से सांसद निधि का धन भारत के स्कूलों में लड़कों और लड़कियों के लिए अलग शौचालय बनाने के लिए खर्च करने को कहा है।

महत्वपूर्ण अवसर पर शौचालय और गंदगी की बात करना ठीक नहीं। हालांकि इस तरह की आलोचना करने वाले लोग बहुत थोड़े से हैं। ऐसा इसलिए, क्योंकि देश की अधिकांश जनता समझ चुकी है कि तमाम मूलभूत समस्याओं के समाधान के बिना भारत का कोई भविष्य नहीं है। इन समस्याओं में एक बड़ी आबादी तक पीने योग्य पानी की अनुपलब्धता, देश के विभिन्न हिस्सों में चौबीसों घंटे बिजली का न आना, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में सरकारी स्कूलों की दयनीय हालत और तमाम शहरों में फैलता वायु प्रदूषण मुख्य है। आजादी के बाद पहले बीस या तीस वर्षों में देश पर शासन करने वालों को इनमें से तमाम समस्याओं का समाधान कर लेना चाहिए था, लेकिन वे विफल रहे और इस तरह की समस्याओं की सूची बढ़ती गई। जाहिर है यह काम कांग्रेस पार्टी का था। आजादी के 67 वर्षों में 55 वर्षों तक कांग्रेस ने शासन किया, इसलिए उसे इस दोष अथवा आलोचना को स्वीकार करना चाहिए। वह मोदी अथवा किसी भी गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री की आलोचना का अधिकार खो चुकी है।

मोदी की आलोचना करने के बजाय हमें देश की जनता को धन्यवाद देना चाहिए कि उसने उन्हें प्रधानमंत्री चुना, जिनका ध्यान इन मूलभूत बातों की तरफ है। अपने चुनाव अभियान में मोदी ने अपनी इच्छा का इजहार करते हुए कहा था कि वह कांग्रेस मुक्त भारत बनाना चाहते हैं। उस समय तमाम लोगों को लगा कि यह उनका बड़बोलापन है और कभी न पूरा हो सकने वाला लक्ष्य है। तथ्य रखा गया कि कांग्रेस देश की सबसे पुरानी पार्टी है, जिसकी जड़ें काफी गहरी हैं। इसमें कुछ हद तक सच्चाई भी है। कांग्रेस मुक्त भारत का विचार अभी भी काफी दूर का सपना है, लेकिन इसमें दो राय नहीं कि मोदी ने एक ऐतिहासिक लक्ष्य हासिल कर लिया है और वह है कि नेहरू-गांधी परिवार मुक्त भाषण। उन्होंने अपने भाषण में नेहरू-गांधी परिवार का कोई उल्लेख नहीं किया। लाखों भारतीय लोग मनमोहन सिंह के नीरस और नौकरशाही के तौर-तरीकों वाले भाषण की आलोचना करते थे, क्योंकि इसमें नेहरू-गांधी परिवार का बार-बार उल्लेख किया जाता था। इस संदर्भ में 15 अगस्त को मोदी के बिना लिखे धाराप्रवाह भाषण से लोगों को बड़ी राहत और संतुष्टि मिली। पिछले वर्ष स्वाधीनता दिवस के अवसर पर मनमोहन सिंह ने 1950 में जवाहरलाल नेहरू के कार्यों की सराहना करते हुए अपने भाषण की शुरुआत की थी। इसके बाद उन्होंने इंदिरा गांधी की प्रशंसा करते हुए 1970 में किए गए उनके कार्यों को सराहा और अंत में नौवें दशक में किए गए राजीव गांधी के कार्यों की तारीफ की। इसी तरह 2012 में 15 अगस्त के अपने भाषण में मनमोहन सिंह ने नेहरू और राजीव गांधी का उल्लेख किया और राजीव हाउसिंग लोन स्कीन की घोषणा की। हालांकि उनके नाम पर पहले से दर्जनों योजनाएं चल रही थीं। मनमोहन सिंह ने अपने दोनों ही भाषणों में महात्मा गांधी का महज जिक्र किया, लेकिन ध्यान रखा तो केवल अपने राजनीतिक आकाओं का, जो कि उनकी शीर्ष प्राथमिकता थे। मनमोहन सिंह के उलट मोदी ने भारत की सफलता के लिए भारतीयों को श्रेय दिया, जिनमें किसान, कामगार, सरकारी कर्मचारी और सेना के जवान शामिल हैं।

मोदी ने बुद्ध, महात्मा गांधी, अपने आदर्श और प्रेरणापुरुष स्वामी विवेकानंद, श्रीअरविंद, सरदार पटेल, जयप्रकाश नारायण और लाल बहादुर शास्त्री का उल्लेख किया। जिन्होंने भी दोनों प्रधानमंत्रियों का भाषण सुना होगा उन्होंने चुने गए और नियुक्त किए गए प्रधानमंत्री के बीच का अंतर अवश्य महसूस किया होगा। ■

(लेखक, वरिष्ठ स्तंभकार हैं)

(साभार- दै. जागरण)

आजादी के बाद पहले बीस या तीस वर्षों में देश पर शासन करने वालों को इनमें से तमाम समस्याओं का समाधान कर लेना चाहिए था, लेकिन वे विफल रहे और इस तरह की समस्याओं की सूची बढ़ती गई। जाहिर है यह काम कांग्रेस पार्टी का था। आजादी के 67 वर्षों में 55 वर्षों तक कांग्रेस ने शासन किया, इसलिए उसे इस दोष अथवा आलोचना को स्वीकार करना चाहिए।

मोदी ने बुद्ध, महात्मा गांधी, अपने आदर्श और प्रेरणापुरुष स्वामी विवेकानंद, श्रीअरविंद, सरदार पटेल, जयप्रकाश नारायण और लाल बहादुर शास्त्री का उल्लेख किया। जिन्होंने भी दोनों प्रधानमंत्रियों का भाषण सुना होगा उन्होंने चुने गए और नियुक्त किए गए प्रधानमंत्री के बीच का अंतर अवश्य महसूस किया होगा।

प्रधान सेवक का उदय

✍ एनके सिंह

चूंकि भारत में द्वंद्वात्मक प्रजातंत्र है लिहाजा मीडिया का मूल काम सत्ता की गलतियों से, नेता की कमियों और सरकार की खामियों से जनता को अवगत कराना है। इस पैमाने पर मैं आमतौर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आलोचक रहा हूं, लेकिन अद्भुत था लाल किले की प्राचीर से किसी प्रधानमंत्री का वह भाषण। किसी भी दृष्टिकोण से उस भाषण में कोई दोष निकालना मात्र हठधर्मिता होगी। वह किसी राजनेता का परंपरागत 'हम बनाम वे' के भाव में दर्शकों को दिया जा रहा भाषण नहीं था, बल्कि लगता था कि एक ऐसा समाज-सुधारक भावना के संतुलित अतिरेक में बोल रहा है। यह कहना मुश्किल होगा कि प्राचीर पर मोदी स्टेट्समैन बड़े थे या समाज सुधारक बड़े।

यह मोदी का आत्मविश्वास ही था कि वह प्रधानमंत्री के रूप में स्वतंत्रता दिवस भाषण को बगैर लिखे बोले। जिस तरह का देश में माहौल है उसमें बगैर किसी बुलेट-प्रूफ केबिन में बंद हुए धाराप्रवाह एक घंटे से अधिक समय तक बोलना अपने सुरक्षा बलों पर भरोसा दर्शाता है।

मैंने नेहरू को भी सुना है। अटल बिहारी वाजपेयी को भी इसी प्राचीर से बोलते हुए सुना है। पर मोदी का भाषण न केवल अलग था, बल्कि पहली बार लगा कि कोई प्रधानमंत्री अभिभावक भी है तो समाज सुधारक भी। शासन का मुखिया भी है तो सेवक भाव भी रखता है। आध्यात्मिक गुरु भी है तो गरीबों का मसीहा भी। अद्वैतवाद से अवमूल्यन तक लगभग हर पहलू पर एक संदेश देकर मोदी ने न केवल अपने को जनता से कनेक्ट किया, बल्कि उसे सोचने पर मजबूर किया कि क्या वे यही भारत अपनी अगली पीढ़ी के लिए छोड़ जाएंगे? क्या पिछले 67 सालों में आपने कभी किसी प्रधानमंत्री को यह कहते सुना कि मां-बाप अगर अपने बेटे से पूछे कि तुम कहां जा रहे हो, किसलिए जा रहे हो तो आज यह दुष्कर्म की घटनाएं ना होंगी?

यह मोदी का आत्मविश्वास ही था कि वह प्रधानमंत्री के रूप में स्वतंत्रता दिवस भाषण को बगैर लिखे बोले। जिस तरह का देश में माहौल है उसमें बगैर किसी बुलेट-प्रूफ केबिन में बंद हुए धाराप्रवाह एक घंटे से अधिक समय तक बोलना अपने सुरक्षा बलों पर भरोसा दर्शाता है। मैंने नेहरू को भी सुना है। अटल बिहारी वाजपेयी को भी इसी प्राचीर से बोलते हुए सुना है। पर मोदी का भाषण न केवल अलग था, बल्कि पहली बार लगा कि कोई प्रधानमंत्री अभिभावक भी है तो समाज सुधारक भी। शासन का मुखिया भी है तो सेवक भाव भी रखता है। आध्यात्मिक गुरु भी है तो गरीबों का मसीहा भी। अद्वैतवाद से अवमूल्यन तक लगभग हर पहलू पर एक संदेश देकर मोदी ने न केवल अपने को जनता से कनेक्ट किया, बल्कि उसे सोचने पर मजबूर किया कि क्या वे यही भारत अपनी अगली पीढ़ी के लिए छोड़ जाएंगे?

यह गहरी बात है। एक ऐसे समय में जब अभिभावकों का अपने बेटों पर नियंत्रण कम हो रहा है और नतीजतन लंपटता चरम पर हो, किशोरों द्वारा किए गए दुष्कर्म व अन्य अपराध इसके गवाह हैं तो मोदी का उलाहना हर अभिभावक के लिए गहरी नसीहत है। मोदी की इस अपील में न तो कोई वोट पाने की चाहत थी, न ही कोई अपने को उचित ठहराने की जिद्दोजेहद। एक निर्दोष गुजारिश थी। परिवार को फिर से संगठित कर सोशल पुलिसिंग को या पारिवारिक नियंत्रण को फिर से बहाल करने की। युवा पौध में विकृति घर से शुरू होती है, यह समाजशास्त्रीय सत्य है। इसी पौध को फिर से जंगल की झाड़ी ना बनाकर बाग में तराशे फलदार पेड़ लगाने की ललक उनमें नजर आ रही थी।

तीन बार इस इसरार के साथ कि मेरी बात के राजनीतिक मायने ना निकाले जाएं, मोदी ने शासन में पनपे आपसी दुराव का जिक्र करते हुए कहा

कि सरकार के ही दो विभाग एक दूसरे के खिलाफ अदालत में गए थे, एक विभाग और दूसरे विभाग में कोई तालमेल नहीं था।

ठीक इसके पहले प्रधानमंत्री ने विपक्ष को साथ लेकर चलने की प्रतिबद्धता जताई और हाल में खत्म हुए संसद सत्र के दौरान सभी पार्टियों के सकारात्मक भाव की जबरदस्त प्रशंसा की। कहीं वो बनाम हम का भाव नहीं था। दुखती रगों को मात्र छूना ही नहीं, उन पर हल्के से दबाव डालकर मवाद निकालना मोदी की भाषण कला का अहम अंग है। लाल किले की प्राचीर से बोलते हुए एक बार फिर प्रधानमंत्री ने उन रगों को झकझोरा। मीडिया लिखता है कि नई सरकार के आने का बाद अफसर समय से आने लगे। यह खबर किसी भी प्रधानमंत्री को खुश कर सकती है, पर मुझे दु:ख हुआ कि सरकारी कर्मचारी का समय पर आना भी मीडिया की खबर है।

दरअसल पिछले 67 सालों में हम अफसरों के गैर जिम्मेदाराना रवैये के इतने आदी हो चुके हैं कि अब उनका समय से आना भी खबर बन जाता है।

अपने भाषण की शुरुआत ही मोदी ने अपने को प्रधान सेवक कह शुरू की और यहीं से शुरू हुआ जनता से उनका कनेक्ट। याद आता है स्वामी विवेकानंद का शिकागो भाषण, जिसमें उनके ब्रदर्स एंड सिस्टर्स कहकर संबोधन करते ही पूरा अमेरिका उनका मुरीद हो गया। आजकल गुरुओं का जमाना है। कोई लव गुरु कहलाता है तो कोई मैनेजमेंट गुरु तो मोदी को कनेक्ट गुरु कहना गलत नहीं होगा।

आज के भाषण के विशेष पहलू हैं जनता को भावोत्तेजित (इंस्पायर) करके

आजाद भारत में शायद यह पहली बार सोचा गया कि सोशल सिक्योरिटी का कवच देकर गरीबों को भी भविष्य की चिंता के दंश से मुक्त किया जाए। देश में नए आंकड़े के अनुसार सात करोड़ के करीब गरीब परिवार हैं। परिवार के मुखिया के निधन पर परिवार के सदस्य यतीम हो जाते हैं, शिक्षा न मिलने से बच्चे लंपटता या अपराध की ओर उन्मुख होते हैं और अभाव में ऐसे परिवार गरीबी की उस गर्त में चले जाते हैं जहां से निकलना असंभव होता है। मोदी की यह योजना दूरगामी और क्रांतिकारी परिणाम देने वाली है।

अपने अंदर झांकने की उत्कंठा पैदा करना और यह विश्वास दिलाना कि तुम एक कदम बढ़ो हम दस कदम बढ़ेंगे। पिछले कुछ दशकों में राजनेताओं ने यह क्षमता खो दी थी कि उनकी बातों पर जनता विश्वास करे। जनता से कनेक्ट होने के कुछ और नमूने देखिए। हल से हरियाली, कम मेक इन इंडिया (आओ और भारत में उत्पादन करो) केमिकल से फार्मास्यूटिकल तक, सांसद मॉडल ग्राम योजना, डिजिटल इंडिया, आदर्श ग्राम, जीरो-डिफेक्ट, जीरो इफेक्ट, प्रधानमंत्री से प्रधान सेवक, प्रधानमंत्री जनधन योजना, बेटियों पर इतने बंधन, बेटों पर कोई नहीं, ये जुमले आम राजनीतिक जुमलों से हटकर थे। इनके जरिये मोदी ने जनता से सीधा संवाद बनाया लाल किले के भाषण से।

दंगों के वातावरण पर भी उसी गरिमा से मोदी ने प्रहार किया। कहीं कोई हिंदू-मुसलमान टाइप परंपरागत या पंथनिरपेक्षता की दुहाई नहीं। सीधा संवाद-आओ, हम मरने-मारने की दुनिया को छोड़ कर जीवन देने वाला समाज बनाएं। मोदी ने इन सबके अलावा जो सबसे क्रांतिकारी घोषणा की वह थी हर गरीब परिवार को एक लाख का बीमा।

आजाद भारत में शायद यह पहली बार सोचा गया कि सोशल सिक्योरिटी का कवच देकर गरीबों को भी भविष्य की चिंता के दंश से मुक्त किया जाए। देश में नए आंकड़े के अनुसार सात करोड़ के करीब गरीब परिवार हैं। परिवार के मुखिया के निधन पर परिवार के सदस्य यतीम हो जाते हैं, शिक्षा न मिलने से बच्चे लंपटता या अपराध की ओर उन्मुख होते हैं और अभाव में ऐसे परिवार गरीबी की उस गर्त में चले जाते हैं जहां से निकलना असंभव होता है। मोदी की यह योजना दूरगामी और क्रांतिकारी परिणाम देने वाली है।

अपने को देश की सीमाओं से बाहर निकलते हुए मोदी ने पूरे सार्क देशों की गरीबी पर आघात किया और संदेश था-हम सब मिलकर इससे लड़ें। यह अपील चीन द्वारा पाकिस्तान या नेपाल को दी जाने वाली कुटिल मदद से काफी अलग थी, एक निर्दोष भरोसा दिलाने का प्रयास था। कुल मिलकर लाल किले की प्राचीर से हुआ मोदी का भाषण दुनिया के विश्वविद्यालयों में 'हाउ टू कनेक्ट विद द मासेज' (कैसे हो जनता से तादात्म्य) पढ़ाए जाने लायक है। ■

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

मोदी सरकार ने उठाए मुद्रास्फीति नियंत्रित करने के गम्भीर कदम

✍ विकाश आनन्द

अभी दो महीने पहले ही भारतीय जनता पार्टी (भाजपा)नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सरकार सत्ता में आई है। नई सरकार के सामने निरंतर बढ़ रही वस्तुओं की कीमतें एक बहुत बड़ी चुनौती है। सत्ताच्युत यूपीए के बेतहाशा भ्रष्टाचार और नीति-विकलांगता ने हर क्षेत्र की स्थिति बिगाड़ कर रख दी, वह चाहे आर्थिक, विदेश नीति अथवा अन्य कोई क्षेत्र हो। पटरी से उतरी अर्थव्यवस्था की स्थिति का सुधार करने के लिए दो महीने की अवधि पर्याप्त नहीं हो सकती है। ये दो महीने किसी भी सरकार के लिए 'ऊंट के मुंह में जीरे' की कहावत के समान ही हैं, हालांकि प्रधानमंत्री मोदी के कठोर परिश्रम से आम आदमी की आस्था सरकार में पुन: स्थापित हुई है। मई 2014 में भारत का थोक मूल्य सूचकांक (डब्लूपीआई) 6.1 प्रतिशत रिकार्ड किया गया। दो महीने में, खराब मौनसून के बावजूद और इराक संघर्ष के कारण सरकार के नीतिनिर्णय और कठोर परिश्रम के कारण जुलाई में, यह सूचकांक पांच महीने के कम स्तर पर 5.19 प्रतिशत पर ले आया गया। वर्तमान में, टमाटर की कीमतों के अलावा शेष सभी आवश्यक वस्तुओं की कीमतें नियंत्रण में हैं।

बढ़ते खाद्य मुद्रास्फीति को संभालने के लिए मोदी सरकार ने 'एग्रीकल्चर प्रोड्यूस मार्केटिंग कमिटी' (एपीएमसी) एक्ट से प्याज सहित फलों और सब्जियों को सूची से बाहर निकाल कर

अभी दो महीने पहले ही भारतीय जनता पार्टी (भाजपा)नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सरकार सत्ता में आई है। नई सरकार के सामने निरंतर बढ़ रही वस्तुओं की कीमतें एक बहुत बड़ी चुनौती है। सत्ताच्युत यूपीए के बेतहाशा भ्रष्टाचार और नीति-विकलांगता ने हर क्षेत्र की स्थिति बिगाड़ कर रख दी, वह चाहे आर्थिक, विदेश नीति अथवा अन्य कोई क्षेत्र हो। पटरी से उतरी अर्थव्यवस्था की स्थिति का सुधार करने के लिए दो महीने की अवधि पर्याप्त नहीं हो सकती है। ये दो महीने किसी भी सरकार के लिए 'ऊंट के मुंह में जीरे' की कहावत के समान ही हैं, हालांकि प्रधानमंत्री मोदी के कठोर परिश्रम से आम आदमी की आस्था सरकार में पुन: स्थापित हुई है।

स्वागत-योग्य कदम उठाया है। इन्हें सूची में से निकाल कर ये मदें एपीएमसी यार्ड करों और स्थानीय शुल्कों से मुक्त हो गई हैं। सरकार ने न्यूनतम निर्यात कीमतों को 67 प्रतिशत बढ़ा दिया और जमाखोरी रोकने के लिए आवश्यक वस्तु अधिनियम के अंतर्गत ले आई क्योंकि कीमतें घरेलू बाजारों मे बढ़ रहीं थीं। प्याज के निर्यात को हतोत्साहित करने के लिए सरकार ने 17 जून को प्याज निर्यात को 300 डॉलर प्रति टन की न्यूनतम कीमत बना दी। सरकार ने आवश्यक वस्तु अधिनियम, 1955 के अंतर्गत भंडारण में परिरक्षण के अंतर्गत प्याज और आलू सहित शामिल करने का निर्णय लिया है। इस कदम से राज्य सरकारों को यह शक्ति मिल जाती है कि राज्य सरकारें जमाखोरों के खिलाफ कार्यवाही कर सकती है और प्याज तथा आलू की कीमतों को नियंत्रित किया जा सकता है।

मोदी-नीत-राजग के निम्नलिखित उठाए गए तात्कालिक कदम:

- कुछेक खेतिहर वस्तुओं पर निर्यात प्रतिबंध लगाया
- जमाखोरों पर टूट पड़ने के आदेश
- निर्यात को हतोत्साहित करने के लिए प्याज की निर्यात की न्यूनतम कीमतों को 150 डालर प्रति टन से बढ़ाकर 300 डालर करना
- 'एग्रीकल्चर प्रोड्यूस मार्केट कमेटी' के माध्यम से बिक्री करने की बजाए किसानों द्वारा बाजार में सब्जियों और फलों की सीधी बिक्री करना
- 22 वस्तुओं की कीमतों पर सूक्ष्म रूप से नजर रखना ताकि इससे खाद्य मुद्रास्फीति प्रभावित हो सकती है।
- 'एस्मा' के पर्यवेक्षण में आलू और प्याज को लाना तथा भण्डारण की सीमा को नियंत्रित करना ताकि उपलब्धता सुलभ बन सके। 'एस्मा' केन्द्रीय कानून है, अर्थात् भारत की संसद द्वारा पारित; परन्तु, अधिकांश रूप से इसका कार्यान्वयन राज्य सरकारें करती हैं। अत: इसकी

सफलता राज्यों पर निर्भर करती है।

- खुले बाजार में 5 मिलियन टन अनाज को जारी करना।
- घरेलू बाजार में कमी को पूरा करने के लिए दालों और खाद्य तेलों का आयात करने के लिए राज्य सरकारों को क्रेडिट लाइन का विस्तार करना।

मुद्रास्फीति के अन्य कारणों में परिवहन की उच्च लागत और खराब भण्डारण इंफ्रास्ट्रक्चर आते हैं। भारत में नगरों और गांवों में अच्छी प्रत्यक्ष कनेक्टिविटी का अभाव है जो आर्थिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

भारत के प्रत्येक क्षेत्र में विशिष्ट प्रकार की मिट्टी और जलवायु, खास प्रकार की खेती के लिए उपयुक्त होती है। भारत के पश्चिमी सिरे की ओर कई ऐसे क्षेत्र हैं जहां वर्ष में 50 सेंटीमीटर से भी कम बारिश होती है, अत: उपजाऊ फसलों के लिए खेती प्रणाली प्रतिबंधित बनी रहती है जिससे सूखे की स्थिति बन सकती है और किसानों को सामान्यत: एक फसल तक अपने को सीमित रखना पड़ता है। गुजरात, राजस्थान, दक्षिणी पंजाब और उत्तरी महाराष्ट्र- ये सभी जलवायु का कोई न कोई प्रकार अनुभव करना पड़ता है और प्रत्येक क्षेत्र में ज्वार, बाजरा और मटर जैसी उपयुक्त फसल बोनी पड़ती हैं। इसके विपरीत, भारत के पूर्वी भाग में बिना सिंचाई वर्ष में 100-200 सेंटीमीटर औसत वर्षा होती है, अत: ये क्षेत्र दो फसलें उगा सकते हैं। पश्चिमी तट, पश्चिमी बंगाल, बिहार, यूपीए और असम के कुछ भाग इस प्रकार की जलवायु से जुड़े हैं और वे चावल, जूट और अन्य कई फसलें बो सकते हैं। यदि हमारे पास परिवहन सुविधाएं बेहतर हों तो अधिक उत्पादन वाली फसलों को देश के दूसरे हिस्सों तक पहुंचाया जा सकता है।

ऐसे नए उत्पादन भी हैं जो जल्द खराब हो सकते हैं और उन्हें इतने लम्बी परिवहन अवधि तक ज्यों की त्यों ताजा और क्वालिटी को बनाए रखने के लिए रेफ्रीजरेशन की जरूरत होती है। वर्तमान सरकार परिवहन सुविधाओं रेल, सड़क, तटवर्ती शिपिंग, एयर ट्रांसपोर्ट, इनलैण्ड वाटर ट्रांस्पोर्ट आदि की कनेक्टिविटी बढ़ाकर सुधारने की योजना बना रही है, विशेष रूप से रेफ्रिजरेटेड परिवहन को महत्व दिया जा रहा है। ताकि फलों, सब्जियों जैसे उत्पादनों को अधिक उत्पादन वाले क्षेत्र से कम उत्पादन वाले क्षेत्रों में भेजा जा सके। सरकार राष्ट्रीय खाद्य ग्रिड पर काम कर रही है जिससे कम उत्पादन वाले क्षेत्रों को उत्पादनकारी क्षेत्रों से जोड़ा जा सके, ताकि सब्जियों और फल खराब न हों और साथ ही कीमतें स्थिर रहें जिससे खाद्य मुद्रास्फीति पर नियंत्रण किया जा सके। देशभर में खाद्य ग्रिड विद्युत ग्रिड की तरह से काम करेगा। आवश्यक खाद्य भण्डारण, जल्द नष्ट होने वाले फल और सब्जियां, पोल्ट्रीज, मत्सयपालन, डेयरी लाइव स्टॉक की उपलब्धता के आंकड़े आनलाइन रियल टाइम डाटा पर उपलब्ध होंगे जिससे बढ़ती हुई किसी की भी कीमत के बारे में तुरंत निर्णय लिया जा सके।

एक अध्ययन से खाद्य पदार्थों का अनुमान लगभग 44000 करोड़ रुपए है जो वर्ष में पर्याप्त प्रोसेसिंग के अभाव के कारण नष्ट हो जाता है। दूध को छोड़कर, जो समग्र उत्पादन का 4 प्रतिशत है, जिसका प्रोसेस हो जाता है। सरकार ने खाद्य प्रोसेसिंग के विकास की पहचान की है जिस पर मुद्रास्फीति नियंत्रण के लिए विशेष क्षेत्र को मान्यता मिली है।

योजना के भाग के रूप में सरकार एक खाद्य नक्शा तैयार कर रही है और एक राष्ट्रीय कोल्ड चेन ग्रिड भी तैयार हो रहा है। खाद्य नक्शे से उन राज्यों की बेहतर तस्वीर सामने रहेगी जहां अधिक उत्पादन होगा। इससे इन क्षेत्रों में बर्बादी रोकने के लिए फसलों के समय इंफ्रास्ट्रक्चर बनाने में मदद मिलेगी और प्रोसेसिंग की जा सकेगी। फलों और सब्जियों को रेल की आवाजाही को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार पहले चरण में वातवा, विशाखापतनम, बड़ागारा, चेरियानाड, भिवांडी रोड, अजारा, नवलूर, कालमबोली और सानंद जैसे 10 स्थानों पर वेयर हाउसिंग कार्पोरेशन के साथ काम करते हुए तापमान को नियंत्रित की सुविधा तैयार करने के लिए काम कर रही है।

इस प्रकार की सुविधाओं को सुधारने में समय लगेगा। कोई भी इस कार्य को 60 दिन में नहीं कर सकता। यह तथ्य बिल्कुल सही है कि राजग सरकार का मुद्रास्फीति पर नियंत्रण पाने का पुराना रिकार्ड यूपीए सरकार से कहीं अच्छा रहा है। केन्द्र में वाजपेयी-नीत राजग के शासन काल में मुद्रास्फीति 4.8 प्रतिशत थी जबकि यूपीए सरकार के पहले 9 वर्षों में यह 6.7 प्रतिशत रही। 2002 के सूखा वर्ष (राजग शासन), खाद्य मुद्रास्फीति मात्र 1.8 प्रतिशत थी, परन्तु सूखा वर्ष 2010 के यूपीए शासन में यह 15.3 प्रतिशत देखी गई। ■

योजना के भाग के रूप में सरकार एक खाद्य नक्शा तैयार कर रही है और एक राष्ट्रीय कोल्ड चेन ग्रिड भी तैयार हो रहा है। खाद्य नक्शे से उन राज्यों की बेहतर तस्वीर सामने रहेगी जहां अधिक उत्पादन होगा।

भाजपा राष्ट्रीय कार्यकारिणी घोषित

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने 17 अगस्त 2014 को निम्नलिखित पदाधिकारियों को मनोनीत किया है-

उपाध्यक्ष

1.	श्री बण्डारू दत्तात्रेय	तेलंगाना
2.	श्री बी.एस. येदियुरप्पा	कर्नाटक
3.	श्री सत्यपाल मलिक	उत्तर प्रदेश
4.	श्री मुख्तार अब्बास नकवी	उत्तर प्रदेश
5.	श्री पुरुषोत्तम रूपाला	गुजरात
6.	श्री प्रभात झा	मध्य प्रदेश
7.	श्री रघुबर दास	झारखंड
8.	श्रीमती किरण माहेश्वरी	राजस्थान
9.	डॉ. विनय सहस्रबुद्धे	महाराष्ट्र
10.	श्रीमती रेनू देवी	बिहार
11.	श्री दिनेश शर्मा	उत्तर प्रदेश

महामंत्री

1.	श्री जगत प्रकाश नड्डा	हिमाचल प्रदेश
2.	श्री राजीव प्रताप रूडी	बिहार
3.	श्री मुरलीधर राव	तेलंगाना
4.	श्री राममाधव	आंध्र प्रदेश
5.	सुश्री सरोज पाण्डे	छत्तीसगढ़
6.	श्री भूपेन्द्र यादव	राजस्थान
7.	प्रो. राम शंकर कथारिया	उत्तर प्रदेश
8.	श्री रामलाल (संगठन महामंत्री)	दिल्ली

सह महामंत्री (संगठन)

1.	श्री वी. सतीश	कर्नाटक
2.	श्री सौदान सिंह	छत्तीसगढ़
3.	श्री शिव प्रकाश	उत्तर प्रदेश
4.	श्री बी.एल. संतोष	कर्नाटक

मंत्री

1.	श्री श्याम जाजू	महाराष्ट्र
2.	डॉ. अनिल जैन	दिल्ली
3.	श्री एच. राजा	तमिलनाडु
4.	श्री रोमन डेका	असम
5.	श्रीमती सुधा यादव	हरियाणा
6.	श्रीमती पूनम महाजन	महाराष्ट्र
7.	श्री रामविचार नेताम	छत्तीसगढ़
8.	श्री अरुण सिंह	उत्तर प्रदेश
9.	श्री सिद्धार्थनाथ सिंह	उत्तर प्रदेश
10.	श्री सरदार आर.पी. सिंह	दिल्ली
11.	श्री श्रीकांत शर्मा	उत्तर प्रदेश
12.	श्रीमती ज्योति धुर्वे	मध्यप्रदेश
13.	श्री तरुण चुग	पंजाब
14.	श्री रजनीश कुमार	बिहार

प्रवक्ता

1.	श्री शाहनवाज हुसैन	बिहार
2.	डा. सुधांशु त्रिवेदी	उत्तर प्रदेश
3.	श्रीमती मीनाक्षी लेखी	दिल्ली
4.	श्री एम.जे. अकबर	दिल्ली
5.	श्री विजय सोनकर शास्त्री	उत्तर प्रदेश
6.	श्रीमती ललिता कुमारमंगलम	तमिलनाडु
7.	श्री नलिन एस. कोहली	दिल्ली
8.	डा. संबित पात्रा	ओडिशा
9.	श्री अनिल बलूनी	उत्तराखण्ड
10.	श्री जीवीएल नरसिंहाराव	आंध्र प्रदेश

मोर्चा अध्यक्ष

महिला मोर्चा	श्रीमती विजया राहतकर	महाराष्ट्र
युवा मोर्चा	श्री अनुराग ठाकुर	हि. प्रदेश
अनु.जाति मोर्चा	श्री दुष्यंत कुमार गौतम	दिल्ली
अनु. जनजाति मोर्चा	श्री फग्गन सिंह कुलस्ते	मध्य प्रदेश
अल्पसंख्यक मोर्चा	श्री अब्दुल राशिद अंसारी	

कार्यालय मंत्री

1.	इंजि. श्री अरुण कुमार जैन	दिल्ली

भाजपा अध्यक्ष श्री अमित शाह ने चार राज्यों के नए अध्यक्षों को भी नियुक्त किया

भाजपा अध्यक्ष श्री अमित शाह ने चार राज्यों के नए पार्टी अध्यक्षों अर्थात् मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु और असम के अध्यक्षों को नियुक्त किया। श्री नंद कुमार सिंह चौहान, सांसद को मध्य प्रदेश का नया प्रदेशाध्यक्ष नियुक्त किया गया है। श्री धर्मपाल कौशिक को छत्तीसगढ़ का प्रदेशाध्यक्ष तो तमिलनाडु की नए प्रदेशाध्यक्षा हैं श्रीमती तमिलिसाई सुन्दराराजन। श्री सिद्धार्थ भट्टाचार्य को असम का नया प्रदेशाध्यक्ष नियुक्त किया गया है। ■

'समृद्धि का आधार है गोवंश विकास'

केन्द्र में सरकार बनाने के बाद श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा अपने संकल्प पत्र को अक्षरश: सत्य कर धरातल पर उतारने में जुटी हुई है। भारतीय संस्कृति के एक महत्वपूर्ण अंग और किसानों का पालन करने वाली गौमाता के कल्याण के लिए गोवंश विकास प्रकोष्ठ भाजपा ने आज देशभर से अपने पदाधिकारियों के साथ राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक का आयोजन किया।

इस बैठक में मुख्य अतिथि के तौर पर भारत सरकार के परिवहन मंत्री माननीय नितिन गडकरी और कृषि मंत्री माननीय श्री राधामोहन सिंह जी का सानिध्य प्राप्त हुआ।

बैठक को संबोधित करते हुए कृषि मंत्री ने राष्ट्रीय गौकुल मिशन की विधिवत शुभारंभ करते हुए कहा कि इस योजना के तहत गौग्राम की स्थापना कर किसानों को गाय के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाया जायेगा। गौग्राम योजना के बारे में विस्तृत चर्चा करते हुए कृषि मंत्री ने कहा कि नस्ल सुधार, गोवंश की संख्या में वृद्धि, दूध उत्पादन को बढाना, आनुवांशिक संरचना में सुधार और वृद्धि के उपाय इस योजना के अंतर्गत किए जायेंगे। इन सभी कार्यो के लिए बारहवीं पंचवर्षीय योजना में 500 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है, जिसमें 150 करोड़ वित्तीय वर्ष 2014-15 के लिए आवंटित किया गया है।

अपने विशिष्ट उद्बोधन में माननीय परिवहन मंत्री श्री नितिन गडकरी ने कहा कि सरकार की नीतियों को लागू करने के लिए सभी कार्यकर्ताओं के सहयोग की आवश्यकता है। इसके लिए 3सी- कॉपरेशन, कोर्डिनेशन और कम्यूनिकेशन की आवश्यकता पर विशेष बल देना होगा ताकि कार्यकर्ताओं के अनुभव के माध्यम से सरकार अपनी नीतियों को धरातल पर लागू कर सके।

बैठक की अध्यक्षता करते हुये गोवंश विकास प्रकोष्ठ भाजपा के राष्ट्रीय संयोजक श्री मयंकेश्वर सिंह ने गाय को किसान के आय का साधन बनाने पर बल दिया और गाय के माध्यम से भारत को समृद्ध बनाने के उपाय पर बल दिया। राष्ट्रीय (संगठन) महामंत्री श्री रामलाल जी ने गोवंश के विस्तृत स्वरूप की चर्चा करते हुए कहा कि यह एक व्यापक प्रकोष्ठ है जिसके माध्यम से हम 125 करोड़ भारतीयों तक पहुंच सकते हैं। बैठक में उपस्थित कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए प्रकोष्ठ/मोर्चा के समन्वयक श्री महेन्द्र पाण्डेय जी, गोवंश के प्रभारी संगठक हृदयनाथ सिंह का संगठन के विस्तार हेतु विशिष्ट मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

बैठक को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय प्रभारी श्री राधेश्याम गुप्त ने गोवंश के विकास के लिए अपने अनुभवों से कार्यकर्ताओं को अवगत कराया।

समापन सत्र में भाजपा के राष्ट्रीय मंत्री श्री श्याम जाजू ने कार्यकर्ताओं को सरकार के गतिविधियों के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि भाजपा विकास के प्रति पूर्णत: समर्पित है। ■

जींद, हरियाणा

राज्य में दो-तिहाई बहुमत हासिल करेगी भाजपा : अमित शाह

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने हरियाणा के जींद में 16 अगस्त 2014 को विशाल जन सभा संबोधित की श्री शाह ने हरियाणा को कांग्रेस मुक्त, भाजपा युक्त बनाने का आह्वान किया

श्री शाह की मौजुदगी में हरियाणा के कई शीर्ष नेता भाजपा में शामिल हुए।

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने कहा कि हरियाणा विधान सभा के आगामी चुनावों में भाजपा दो-तिहाई सीटें हासिल करेगी।

श्री शाह ने यहां एक विशाल जन सभा को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी लोक सभा चुनाव के दौरान 'कांग्रेस-मुक्त भारत' नारा दिया था। कांग्रेस मुक्त भारत सुनिश्चित करने के पहले चरण के तहत लोक सभा चुनाव में 130 साल पुरानी कांग्रेस की यह स्थिति हो गयी कि विपक्ष के नेता पद के भी लाले पड़ गये हैं। जनता ने भारतीय जनता पार्टी को तो बहुमत दिया साथ ही कांग्रेस से विपक्ष का पद भी छीन लिया।

श्री शाह ने कहा कि कांग्रेस मुक्त भारत बनाने की दिशा में अब दूसरा चरण चार राज्यों में आगामी विधान सभा चुनाव हैं। महाराष्ट्र, जम्मू कश्मीर, झारखंड और हरियाणा में कांग्रेस की सरकार है। जिस दिन जनता का फैसला आयेगा, इन चार राज्यों से भी कांग्रेस साफ हो जायेगी। इन चुनावों के बाद देश न सिर्फ कांग्रेस-मुक्त होगा बल्कि यह भाजपा-युक्त हो जायेगा।

श्री शाह ने कहा कि हार के भय से हरियाणा के मुख्यामंत्री भूपिंदर सिंह हुड्डा वोट मांगने के लिए जातिवाद का सहारा ले सकते हैं। लेकिन मैं उन्हें बताना चाहूंगा कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश हो या हरियाणा, ट्रेलर हो चुका है अब फिल्म होने जा रही है। लोक सभा चुनाव में जाट बहुल इलाकों में कमल ही कमल खिला है। वही नतीजे हरियाणा में भी दोहराये जायेंगे। श्री शाह ने कहा कि हुड्डा जब सत्ता में आते हैं तो भ्रष्टाचार करते हैं चौटाला आते हैं गुंडागर्दी बढ़ जाती है। एक आता है तो किसानों की जमीन उद्योग घरानों को दे देता है, दूसरा आता है तो खुद ही लठ दिखाकर जमीन हथियाता है।

उन्होंने लोगों से अपील की कि नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार है। मोदी सरकार ने देश के विकास का यज्ञ चालू किया है। जिस तरह हरियाणा ने हरित क्रांति में अहम भूमिका निभाई वैसे ही देश की विकास यात्रा का नेतृत्व हरियाणा करे और नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व चल रही इस विकास यात्रा में पूरा हरियाणा जुट हो जाए।

उन्होंने कहा कि आगामी चुनाव में हरियाणा में दो तिहाई बहुमत से भाजपा की सरकार बन रही है। जिस तरह से कौने-कौने से लोग भाजपा में शामिल हो रहे हैं उससे यह स्पष्ट है। हालात ऐसे हैं कि कांग्रेस पार्टी को उम्मीदवार तलाशने के लिए विज्ञापन देना पड़ेगा।

बीरेन्द्र सिंह और कई पूर्व मंत्री व विधायक बड़ी संख्या में समर्थकों के साथ भाजपा में शामिल हुए। इस मौके पर हरियाणा भाजपा के अध्यक्ष रामविलास शर्मा, कैप्टन अभिमन्यु और भाजपा के अन्य वरिष्ठ नेता मौजूद रहे। उन्होंने युवा शक्ति का आभार व्यक्त किया।■

उत्तर प्रदेश

विधानसभा चुनाव भाजपा के लिए असल कसौटी : अमित शाह

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने हरियाणा और महाराष्ट्र सहित चार राज्यों के विधानसभा चुनावों में लोकसभा चुनावों में उत्तर प्रदेश से मिली जबर्दस्त जीत की पुनरावृत्ति का विश्वास जताया।

श्री शाह ने वहीं यह भी कहा कि पार्टी के लिए असल 'कसौटी' उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव हैं।

भाजपा अध्यक्ष बनने के बाद पहली बार उत्तर प्रदेश के दौरे पर आये श्री शाह ने लखनऊ में पार्टी के राज्यस्तरीय कार्यकर्ताओं के सम्मेलन में कहा, ''मुझे यह कहने में कोई झिझक नहीं है कि चार राज्यों के आगामी विधानसभा चुनावों में उत्तर प्रदेश में (लोकसभा चुनावों में मिली जबर्दस्त जीत) की पुनरावृत्ति होने जा रही है लेकिन कसौटी उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव हैं।''

लोकसभा चुनाव के दौरान उत्तर प्रदेश में भाजपा के चुनाव प्रभारी रहे श्री शाह ने कहा कि पिछले लोकसभा चुनाव में यदि उत्तर प्रदेश की जनता मदद नहीं करती तो पूर्ण बहुमत मिलना मुश्किल था। ''ये लोकसभा चुनाव आने वाले विधानसभा चुनाव की नींव हैं। मेरा प्राथमिक दायित्व उत्तर प्रदेश में भाजपा की सरकार बनाना है। मुझे विश्वास है कि यहां हमारी दो तिहाई बहुमत की सरकार बनेगी।''

उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश की जनता अब चाहती है, ''न सपा हो न बसपा, अबकी बार भाजपा हो।'' मगर ये काम कार्यकर्ता ही कर सकते हैं। श्री शाह ने कार्यकर्ताओं का आह्वान किया कि वे उत्तर प्रदेश में मुद्दों पर सरकार से भिड़ें और जनता की आवाज बनें।

श्री शाह ने प्रदेश के बाढ़ प्रभावित इलाकों में कार्यकर्ताओं से अपने स्तर पर राहत और बचाव कार्यों में जुटने का आह्वान किया। उन्होंने कहा, ''सरकार करे ना करे, हर कार्यकर्ता बाढ़ प्रभावित इलाकों में जाए और पीड़ित जनता की सेवा में जुट जाए।''

प्रदेश के बिजली संकट को लेकर भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि अखिलेश सरकार में बिजली उत्पादन का माद्दा ही नहीं है। सरकार की मंशा ही नहीं है।

उन्होंने कहा कि स्पष्ट बहुमत मिलने के बाद केन्द्र में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में जिस तरह काम शुरू किया है, उससे उन्हें भरोसा है कि विधानसभा चुनाव आते आते उत्तर प्रदेश में भाजपा की लहर होगी।

श्री शाह ने कहा कि संप्रग सरकार ने जब सत्ता छोड़ी, हर विभाग में अव्यवस्था थी। मोदी सरकार ने तीन महीने में हर विभाग का पांच साल का 'रोडमैप' तैयार कर जनता के सामने रख दिया है।

मोदी की ''ना खाऊंगा, ना खाने दूंगा'' वाली टिप्पणी का जिक्र करते हुए भाजपा अध्यक्ष ने सम्मेलन में मौजूद सांसदों और विधायकों से कहा, ''मोदी सोते भी नहीं हैं और सोने भी नहीं देते। जो सांसद और मंत्री हैं, उन्हें कुछ दिन में मालूम पड़ जाएगा नेता कैसे बना जाता है।'' ■

बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में राहत व बचाव कार्य में जुट जाएं भाजपा के सांसद, विधायक व कार्यकर्ता : अमित शाह

उत्तर प्रदेश, बिहार और असम में बाढ़ की स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने भाजपा के सभी सांसदों, विधायकों, स्थायनीय निकायों के प्रतिनिधियों और कार्यकर्ताओं को बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में राहत व बचाव कार्य में मदद करने को कहा है।

श्री शाह ने बाढ़ प्रभावित राज्यों की भाजपा इकाइयों से बाढ़ की ताजा स्थिति की जानकारी लेने के बाद संबंधित राज्यों के भाजपा कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों, संसद, विधानमंडल तथा स्थानीय निकाय के निर्वाचित जन-प्रतिनिधियों को यह निर्देश दिया।

श्री शाह ने कहा कि इस प्राकृतिक आपदा के चलते संकट में फंसे लोगों को हरसंभव मदद मुहैया कराई जायेगी। उन्होंने संबंधित राज्यों के भाजपा पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं को तत्काल राहत व बचाव कार्य में जुटने को कहा है।

श्री शाह ने बाढ़ में जान गंवाने वाले लोगों के परिजनों के प्रति संवेदना भी प्रकट की। ■

विशिष्ट सांसद पुरस्कार समारोह में प्रधानमंत्री का संबोधन

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने विशिष्ट सांसद के निर्माण में तीन अनिवार्य गुणों के समीकरण के महत्व पर प्रकाश डाला है। ये हैं – ''नेतृत्व, कर्तव्य, वक्तव्य'' – यानी लीडरशिप, एक्शन और स्पीच। संसद पुस्तकालय में बाल योगी ऑडिटोरियम में आयोजित विशिष्ट सांसद पुरस्कार समारोह को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने लोकसभा अध्यक्ष से अपील की कि वे सभी विधानसभाओं के अध्यक्षों की एक बैठक बुलाएं ताकि विशिष्ट सांसद/विधायक को पुरस्कृत करने की पद्धति राज्यों में भी शुरू की जा सके।

संसद में योगदान के लिए चुने गए तीन पुरस्कार विजेताओं – श्री अरुण जेटली, श्री कर्ण सिंह और श्री शरद यादव को बधाई देते हुए प्रधानमंत्री ने उम्मीद जाहिर की कि सांसदों की युवा पीढ़ी भी उनका अनुकरण करेगी।

प्रधानमंत्री ने कहा कि देश की जनता संसद से बड़ी उम्मीदें रखती है। उन्होंने कहा कि संसद के किसी सत्र को लोग कैसा मानते हैं, इस बारे में सर्वेक्षण कराना उचित होगा। उन्होंने कहा कि ऐसे सर्वेक्षण से सांसदों की आंखें खुल सकती हैं।

प्रधानमंत्री ने हाल के वर्षों में संसदीय कार्यवाहियों में मनो-विनोद की कमी पर खेद व्यक्त किया।

प्रधानमंत्री ने तीखी टिप्पणियां हमें कुछ समय के लिए महत्व दे सकती हैं लेकिन वे प्रभावित या प्रेरित नहीं कर सकतीं। उन्होंने कहा कि इस बात को समझने की आवश्यकता है कि संसद में बोला गया प्रत्येक वाक्य देश को प्रेरित करे। ■

पृष्ठ 6 का शेष...

संस्कृति अर्थात् 'सम्यक कृति'। इससे यह ध्वनि निकलती है कि जो कृति को सम्यक रूप से सुधार दे वह संस्कृति है। कुछ लोग कहते हैं कि संस्कृति शब्द कल्चर का अनुवाद है। यह ठीक नहीं है। हम जो कुछ करते हैं, जिस प्रकार का वैयक्तिक, पारिवारिक या सामाजिक जीवन जीते हैं, उसको निरन्तर सुधारते रहने की प्रक्रिया ही संस्कृति है।

अपनी संस्कृति की एक आधारभूत विशेषता की ओर आप लोगों का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं। सभी जानते हैं कि अपने अपने उपास्य की उत्कृष्टता सिद्ध करने के हठाग्रह के कारण धार्मिक विद्वेष उत्पन्न होता है। भारतीय संस्कृति ने इस विकृति के निराकरण के लिए एक अद्‌भुत स्थापना की है। ऋग्वेद में कहा गया है कि 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' अर्थात परमसत्ता एक ही है जिसे विद्वान विविधा नामों से पुकारते हैं। अत: इनके लिए विवाद करना व्यर्थ है।

इस मान्यता के कारण भारत में बड़ी हद तक साम्प्रदायिक समरसता बनी रही। सम्राट हर्षवर्धन, शिव, सूर्य और बुद्ध तीनों की उपासना करते थे। एक ही परिवार के भिन्न-भिन्न व्यक्ति भिन्न-भिन्न इष्ट देवों की पूजा करते हुए प्रेमपूर्वक साथ-साथ रहते हैं। आचार्य विनोबा भावे ने इसे भारतीय संस्कृति का भेदक लक्षण घोषित करते हुए इसको श्भी वादश की संज्ञा दी हैं। इसका अर्थ हुआ कि यदि हम सब श्रद्धापूर्वक चल रहे हैं तो भगवान तक मेरा रास्ता भी पहुंचेगा और तुम्हारा तथा उसका रास्ता भी पहुंचेगा। यह 'भी वाद' यदि सभी धर्मावलंबियों द्वारा स्वीकार कर लिया जाए तो धार्मिक संघर्ष का मूलोच्छेद हो जाए। परन्तु अभी इसकी संभावना बहुत कम है क्योंकि विनोबा भावे के अनुसार यहूदी, ईसाई और इस्लाम श्ही वादश धर्म हैं। यह भी यहां जोड़ दूं कि बाबा विनोबा भावे के अनुसार मार्क्सवादी भी 'ही वादी' ही हैं। वे भी सबों पर अपना सिद्धांत थोपने के हठाग्रही हैं।

समग्र मानव जीवन के मंगल का विधान करने वाली हमारी सांस्कृतिक चेतना ने जिस भारतीय समाज और राष्ट्र का निर्माण किया उनमें राजनीति की भूमिका को महत्वपूर्ण तो माना गया है किन्तु उसे सर्वोपरि नहीं माना गया है। धर्मधिष्ठित राजनीति का ही हमारे देश में सम्मान था। भारतीय चेतना ने आदर्श शासक के रूप में श्रीराम को ही स्वीकार किया है, जिनकी प्रशस्ति में कहा गया है, 'रामो विग्रहवान धर्म:' राम तो मूर्तिमान धर्म ही है।

राजनीति कभी सत्यमयी, कभी मिथ्यामयी, कभी कठोर, कभी प्रियभाषिणी, कभी हिंसामयी, कभी दयालु, कभी लोभी, कभी उदार, कभी अत्यंत खर्चीली, कभी अत्याधिक अर्जनशील होती है। राजनीति वस्तुत: कल्याणकारी तभी होती है जब वह सच्चे राजधर्म पर आधारित होती है, जिसका एक प्रधान लक्षण यह है कि राजा पार्थिव व्रत का निर्वाह करे अर्थात् उसी प्रकार बिना किसी भेदभाव के सारी प्रजा का समानभाव से पालन करे जिस प्रकार पृथ्वी सब प्राणियों को समान भाव से धारण करती है। इससे यह स्पष्ट है कि भारतीय धर्म व राज्य को मजहबी राज्य या थियोक्रेटिक नहीं कहा जा सकता क्योंकि उसमें जाति, भाषा, उपासना पद्धति आदि के आधार पर जनता में भेदभाव नहीं किया जाता था।

संस्कृतिपरक भारतीय राष्ट्रवाद

यह तथ्य भी उल्लेख्य है कि प्राचीन भारतवर्ष के इतिहास में मनु, रघु, श्रीराम, युधिष्ठिर, अशोक, विक्रमादित्य आदि कुछ ही ऐसे चक्रवर्ती राजा थे जिन्होंने पूरे भारतवर्ष पर शासन किया था। अन्यथा भारतवर्ष के विभिन्न प्रदेशों में अलग-अलग स्वाधीन राज्य थे। हमारा इतिहास साक्षी है कि राजनीतिक दृष्टि से विभिन्न राज्यों में विभक्त होते हुए भी सांस्कृतिक दृष्टि से पूरा भारतवर्ष एक देश माना जाता था। देश के किसी भी कोने में बैठ कर पुण्य कार्य करने वाला व्यक्ति जल को शुद्ध करने के लिए देश के विभिन्न भागों में बहने वाली सात पवित्र नदियों का आह्वान करता था, जो परंपरा आज तक चली आ रही है।

यह ठीक है कि राजनीति को कम महत्व देने का दंड भी हम लोगों को भोगना पड़ा है। जब विदेशी शक्तियां राज्यों पर आक्रमण करती थीं तो देश भर के सभी राज्य मिल कर उनका प्रतिरोध नहीं करते थे। फलत: एक-एक करके वे राज्य विपन्न होते रहे और हमें पराधीनता का अभिशाप भोगना पड़ा। अब हम इस ओर भी सावधान रह कर अपने को राजनीतिक दृष्टि से भी अजेय बनायें, यही अभीष्ट है। जो हो, अपने विचारक्रम को ऐतिहासिक दृष्टि से आगे बढ़ाने पर यह लक्षित किया जा सकता है कि जब तुर्क आये, पठान आये, मुगल आये और केन्द्रीय राज्य क्षमता छिन गयी, तब भी हमारी संस्कृति ने ही सारे देश को एक मानने की दृष्टि को अक्षुण्ण रखा।

यह दिवालोक की भांति स्पष्ट है कि धार्मिक कट्टरता को लांघ कर साधाना और साहित्य के क्षेत्र में पठान-मुगल काल में ही भारतीय संस्कृति की उदारता को मुसलमान भाई अपना रहे थे। दाराशिकोह द्वारा उपनिषदों का फारसी अनुवाद करवाना भी इसी

धारा की कड़ी है। यह देश का दुर्भाग्य ही है कि औरंगजेब की मजहबी कट्टरता ने इस धारा को अवरूद्ध करना चाहा पर फिर भी मंदगति से ही सही वह धारा प्रवाहित होती रही। संत प्राणनाथजी ने समन्वय की दृष्टि से औरंगजेब को पत्र भी लिखा और अपने सम्प्रदाय में श्रीकृष्ण के निराकार रूप की उपासना का प्रवर्तन किया। संगीत, चित्रकला एवं नृत्य के क्षेत्र में भी आदान प्रदान चलता रहा। यह उदार समन्वयी धारा निश्चय ही भारत के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की गौरवपूर्ण उपलब्धि है।

1857 में अंग्रेजों के विरूद्ध छेड़े गये प्रथम स्वाधीनता संग्राम के पूर्व जनसंघर्ष की चेतना जगाने के लिए रोटी के साथ-साथ कमल को प्रतीक के रूप में चुनना, हमारी सांस्कृतिक चेतना के कारण ही संभव हो सका था। इस संग्राम में कंधे से कंधा मिलाकर हिन्दू और मुसलमान अंग्रेजी राज्य को उखाड़ फेंकने के लिए लड़े थे। दुर्भाग्य से इस स्वातंर्त्य समर के विफल होने के बाद जनता में व्यापक हताशा फैल गयी। राष्ट्र को इस हताशा से उबारने के लिए पुनरू एक बार हमारी सांस्कृतिक चेतना ही सक्रिय हुई। राजा राम मोहन राय, श्री रामकृष्ण परमहंस देव, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि दयानन्द सरस्वती, श्री अरविन्द, स्वामी रामतीर्थ आदि महापुरूषों ने भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल पक्षों को उभार कर और विकृतियों को नकार कर पुनः देश में नवजीवन का संचार किया। इस सांस्कृतिक जागरण का एक सुफल यह भी हुआ कि पाश्चात्य ज्ञान-विभान और जीवन मूल्यों के अंधानुकरण के अतिरेकों से मुक्त होकर भारतीय प्रबुद्ध चित्र ने भारतीय और पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान आदि के स्वस्थ समन्वय पर बल दिया। इस सांस्कृतिक जागरण की फलश्रुति ही थे भारतीय स्वाधीनता के सहिंस और अहिंसा आन्दोलन। आरंभ में इन आन्दोलनों को सभी भारतीयों का समर्थन प्राप्त था। किन्तु कालान्तर में अंग्रेजों की कूटनीति के कारण कट्टरपंथी मुसलमान इनसे कटते गये। दुर्भाग्य की बात है कि श्शसारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमाराश्श लिखने वाले अल्लामा इकबाल ने पाकिस्तान का बीजारोपण किया और एक समय के हिन्दू मुस्लिम एकता के समर्थक, नरमपंथी नेता कायदे आजम जिन्ना अंग्रेजों की कूटनीति को सफल करते हुए पाकिस्तान के जनक बने। मजहब के आधार पर जिस पाकिस्तान की सृष्टि हुई थी वह 1971 में टूट गया। स्वाधीन बांग्लादेश इस बात का प्रमाण है कि मजहब के नाम पर बने पाकिस्तान की नींव कितनी खोखली थी। बचे-खुचे पाकिस्तान में भी पंजाबी, सिंधी, बलूची, पख्तून, मुहाजिर के भेद उग्र होते जा रहे हैं। मुहाजिरों के नेता अल्ताफ हुसैन ने तो साफ-साफ कह दिया है कि पाकिस्तान का निर्माण ऐतिहासिक भूल थी। इसलिए उसने "सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा" फिर से गाना शुरू कर दिया है।

इससे यही शिक्षा लेनी चाहिए कि उपासना पद्धति एवं सामाजिक रीति-नीति की भिन्नताओं के बावजूद साझी भारतीय सांस्कृतिक चेतना को हम लोग और दृढ़ करें।

भारत में बड़ी हद तक साम्प्रदायिक समरसता बनी रही। सम्राट हर्षवर्धन, शिव, सूर्य और बुद्ध तीनों की उपासना करते थे। एक ही परिवार के भिन्न-भिन्न व्यक्ति भिन्न-भिन्न इष्ट देवों की पूजा करते हुए प्रेमपूर्वक साथ-साथ रहते हैं। आचार्य विनोबा भावे ने इसे भारतीय संस्कृति का भेदक लक्षण घोषित करते हुए इसको श्भी वादश की संज्ञा दी हैं। इसका अर्थ हुआ कि यदि हम सब श्रद्धापूर्वक चल रहे हैं तो भगवान तक मेरा रास्ता भी पहुंचेगा और तुम्हारा तथा उसका रास्ता भी पहुंचेगा। यह 'भी वाद' यदि सभी धर्मावलंबियों द्वारा स्वीकार कर लिया जाए तो धार्मिक संघर्ष का मूलोच्छेद हो जाए। परन्तु अभी इसकी संभावना बहुत कम है क्योंकि विनोबा भावे के अनुसार यहूदी, ईसाई और इस्लाम 'ही वाद' धर्म हैं। यह भी यहां जोड़ दूं कि बाबा विनोबा भावे के अनुसार मार्क्सवादी भी श्ही वादीश ही हैं। वे भी सबों पर अपना सिद्धांत थोपने के हठाग्रही हैं। मध्ययुग में राजनीति की उपेक्षा करने का भरपूर दण्ड हम लोग भोग चुके हैं अतः अब राजनीतिक आवश्यकताओं के प्रति भी पूर्णतरू सजग रहना होगा। खासकर इस बात का ध्यान रखना होगा कि देश में बलिष्ठ राज्यों के साथ-साथ केन्द्र भी भरपूर बलिष्ठ हो जिससे हमारी सीमाओं पर कारगिल के सदृश अनुप्रवेश करने का दुस्साहस करने वालों को उचित सबक सिखाया जा सके।

एकात्म भारतीय संस्कृति

संसार का कोई भी देश ऐसा नहीं है जिसकी संस्कृति ने दूसरे देशों की संस्कृतियों से आदान-प्रदान न किया हो। आधुनिक युग में यह प्रक्रिया और भी तेज हो गयी है। फिर भी दुनिया का कोई दूसरा देश ऐसा नहीं है जो अपनी संस्कृति को सामासिक संस्कृति कहता हो। अतरू हमें अकुंठ चित्त से अपने देश की संस्कृति को सीधे भारतीय संस्कृति ही कहना चाहिए। ■

(एकात्म मानववाद अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान, नई दिल्ली द्वारा आयोजित सेमिनार में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल विष्णुकांत शास्त्री द्वारा दिए गए भाषण से संकलित है।)